RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 26 जून 2020/ पोस्टिंग तिथि 29 जून

बाल विज्ञान पत्रिका, जुलाई 2020

चकमक

मूल्य ₹50

गैलीलियो के नाम मेरी चिट्ठी

आदित्य श्रीनिवासन
चौथी, ह्यूरॉन स्ट्रीट जूनियर पब्लिक स्कूल, टोरॉन्टो, कनाडा

अनुवाद:
सुशील जोशी

प्रिय प्रोफेसर गैलीलियो गैलीली,

मैंने अभी आपकी जीवनी पढ़ी। आपके सोचने का ढंग मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे समझ आया कि उस समय में आपकी तरह सोचना बहुत मुश्किल रहा होगा जब अरस्तू के विचारों, जैसे भारी चीज़ें हलकी चीज़ों के मुकाबले तेज़ी-से गिरती हैं, को हमेशा से सही माना जाता था। लेकिन उनको गलत साबित करने का आपका तरीका सच में बहुत रचनात्मक था। आपके आविष्कार बहुत ही शानदार थे। उनमें से मेरा पसन्दीदा आविष्कार हायड्रॉलिक मशीन* है जो बताती है कि कोई धातु कितनी कीमती है।

मुझे सच में बहुत खेद है कि आपकी बेटी की मौत उस समय हुई जब आप नज़रबन्द थे। यह आपके लिए बहुत मुश्किल रहा होगा। क्योंकि तब आप घर से निकलकर अपने दोस्तों से मिलने भी नहीं जा सकते थे, जो आपको सांत्वना देते।

नज़रबन्द किए जाने से पहले और उसके बाद भी आप एक सशक्त इन्सान थे। लोग आपसे नफरत करते थे क्योंकि आप कॉपरनिकस प्रणाली को मानते थे। लेकिन क्या आपने इस बात का असर खुद पर होने दिया? नहीं, और यदि आज जीवित होते तो भी नहीं होने देते। आपने मुझे प्रेरणा दी है कि मैं आपके जैसे आविष्कार करूँ। यदि आप जीवित होते तो मैं चाहता कि आप मुझे सिखाएँ कि यह कैसे करूँ। शायद एक सप्ताह पहले मैंने एक गैलीलियोस्कोप बनाया था जो एक दूरबीन है! इस साल यदि आप जीवित होते तो बहुत खुश होते क्योंकि यह अन्तर्राष्ट्रीय खगोलशास्त्र वर्ष है।

मुझे यकीन है कि यह जानकर आपको वाकई खुशी होती कि आपने लोगों को कितना प्रेरित किया है। यहाँ तक कि लोगों ने अन्तरिक्ष के एक मिशन का नाम भी आपके नाम पर रखा है। और यह प्रेरणा ऐसे ही नहीं आ गई, यह आपकी लगन से आई है। आप इतने अडिग रहे कि आपने लोगों को यह समझाने के लिए बातचीत के रूप में किताबें लिखीं कि कॉपरनिकस क्या कहने की कोशिश कर रहे थे।

आप हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहे। चर्च आपके खिलाफ था फिर भी आपने अपने विचार सबके सामने रखे। आपको पता है यह कितनी बहादुरी का काम था? कॉपरनिकस की प्रणाली में विश्वास करने वाले किसी अन्य वैज्ञानिक ने कभी अपने विचार वैसे व्यक्त नहीं किए, जैसे आपने किए। आप उन सबसे अद्‌भुत लोगों में से हैं, जिन्हें मैं जानता हूँ।

भवदीय,
आदित्य श्रीनिवासन

अंक 406 • जुलाई 2020

चकमक

इस बार

पाद मंत्र

पादस्य राजा भटभटां
तस्य मंत्री टुनटुनी
अल्प शब्द मलय गन्ध
निःशब्द प्राणघातिका

अर्थात-
ज़ोरदार आवाज़ वाली पाद, पादों का राजा है
लम्बी आवाज़ वाले पाद उसके मंत्री हैं
धीमी आवाज़ वाले पाद अच्छी-खासी गन्ध वाले होते हैं
बिना आवाज़ वाले पाद जानलेवा होते हैं

प्रस्तुति: टुलटुल बिस्वास

गैलीलियो के नाम... - आदित्य श्रीनिवासन - 2
कैमरे के लैंस से... - सजिता नायर व रुचि शेवड़े - 4
अपना धर्म छोड़ना - अजेन्द्र सिंह - 9
आदा पादा किसने पादा - सुशील शुक्ल - 12
कल रात मैंने उसे मार दिया - अम्बर - 14
तुम भी जानो - 15
अनलॉक - शिवचरण सरोहा - 16
हैलो डायरी - सजिता नायर - 18
टिड्डियाँ और हम - 20
बन्दरों से मुलाकात - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन - 22
इश्क़ का मस्सा - नेहा बहुगुणा - 24
क्यों-क्यों - 26
बोरेवाला - जयश्री कलाथिल - 28
मेरा पन्ना - 32
माथापच्ची - 36
चित्रपहेली - 38
मेरा पन्ना - 40
पुस्तक चर्चा - सुशील शुक्ल - 42

आवरण चित्र: योगेश बेदी

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर
कनक शशि

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

सहयोग
अभिषेक दूबे

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

जंगलों में घूमना, बाघ, हाथी, नाग जैसे जानवरों को करीब से देखना, उनकी फोटो निकालना — ये था बेदी ब्रदर्स का बचपन। बड़े होकर बेदी ब्रदर्स भारत के जाने-माने वाइल्डलाइफ फिल्ममेकर और फोटोग्राफर बने। बेदी खानदान की तीन पुश्तें इसी फील्ड में हैं — उनके पिता रमेश बेदी नामचीन वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर और लेखक थे, बेटे नरेश व राजेश बेदी अपने फिल्मों और फोटो के लिए मशहूर हैं और उनके बेटे भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं।

पिछले चार दशकों से देश के लुप्त हो रहे जानवरों, खासकर बड़े जानवरों पर बेदी ब्रदर्स ने अनेक फिल्में बनाई हैं। उनकी तमन्ना थी कि वे आसमान से जंगलों की फिल्मिंग करें। और 2013 में दोनों भाइयों ने दूरदर्शन प्रसार के साथ मिलकर एक ऐसी सीरीज़ निकाली जिसमें उन्होंने यही किया। इस सीरीज़ का नाम था वाइल्ड अडवेन्चर्स - बलूनिंग विथ बेदी ब्रदर्स।

जनवरी में भोपाल लिटरेचर फेस्टिवल में बेदी बन्धुओं ने भी भाग लिया था। इस मौके पर उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं:

नरेश बेदी व राजेश बेदी के साथ बातचीत

कैमरे के लैंस से वाइल्डलाइफ अडवेन्चर

सजिता नायर और रुचि शेवड़े
फोटो: राजेश बेदी

अपने पिताजी के साथ के जंगल के अपने अनुभवों के बारे में कुछ बताइए।

नरेश: हमारे पिताजी की ही देन है कि आज हम यहाँ हैं। हम लोग पैदा हुए हरिद्वार में। हमारे यहाँ हर शनिवार-रविवार या छुट्टी वाले दिन जंगल जाने का रिवाज़ था। जैसे आज बसन्त पंचमी है तो आज पिकनिक होगी। आज जंगल देखने जाएँगे। या वो हाथी मर गया है तो वहाँ उसको देखने चलो। यह हमारा शौक था। मुझे याद है एक बार पिताजी को पता चला कि कहीं पर एक टस्कर* मर गया है। उसका स्केलेटन म्यूज़ियम में रखने के लिए लाया जाना था। उन्होंने खुद आगे बढ़कर इज़ाज़त ली और मुझे कन्धे पर बैठाकर ले गए। हम ट्रक लेकर उस टस्कर को लेने गए। रास्ते भर कुछ इस तरह की बातें चलती रहतीं—

"अच्छा ये पेड़ क्या है?"

"वो नीचे वाले पेड़ का क्या नाम है?" फिर वो बताएँगे आपको कि क्या नाम है।

* टस्कर यानी बड़े हाथीदाँत वाला नर हाथी

“अच्छा ये कौन-सा पेड़ है?”

“बाबूजी, नहीं आता।”

“अरे! अभी तो बताया था! अच्छा ये कौन-सा पेड़ है?”

वो दोबारा नाम कुछ इस तरह से बताते कि आपको वह याद रह जाता। वो कुछ पेड़ों के बोटैनिकल नाम भी बताते। जैसे ओसिमम सैंक्टम तुलसी का नाम है यह बात उन्होंने मेरे सामने इतनी बार दोहराई कि मुझे अभी तक याद है। बोटैनिकल नाम बताने में उनकी मास्टरी थी। वो औषधीय पौधों के विशेषज्ञ थे।

राजेश: पिताजी हमको हर छुट्टी में दिल्ली से जिम कॉर्बेट लेकर जाते थे। तब हमारे पास न तो कोई कार थी, ना ही जीप। हम लोग ट्रक में बैठकर जिम कॉर्बेट जाते थे। वहाँ पहुँचने के बाद रहने-खाने की जो कठिनाई होती थी, उस सब में उन्होंने हमें डाल दिया था। वे कहते, ये तो ऐसे ही होगा। जब तुम आओगे तो ये सब चीज़ें तो तुम्हें करनी हैं, झेलनी हैं।

मान लो कि तुम्हें जंगल में हाथी देखना है। तो कैसे देखोगे? सुबह जल्दी से जल्दी अपने कैम्प से या टैंट से निकलोगे। गार्ड को लेकर चलोगे। छोटी लेकिन ज़रूरी जानकारियों का ध्यान रखोगे, जैसे कि हवा का रुख हाथी की तरफ है या किसी दूसरी तरफ। यदि हवा तुम्हारी तरफ से हाथी की तरफ जा रही है तो हाथी को तुम्हारी गन्ध आ जाएगी। वो डर जाएगा। भागने लगेगा।

नरेश: ये ऐसी जानकारियाँ हैं जो आपको किताबों में नहीं मिलती हैं।

राजेश: ये जंगल में जाकर अनुभव से सीखी जानकारियाँ हैं। जंगल में कब क्या करना है, ये किस जानवर की आवाज़ है, ये अलार्म कॉल है या नहीं, ये स्पॉटेड डियर की अलार्म कॉल है यानी कि आसपास या तो कोई टाइगर है या फिर लेपर्ड (तेन्दुआ)। ये सब बातें हमने बचपन में उनके साथ जंगल जाकर सीखीं।

आप भारत के कई जंगली इलाकों में घूमें हैं, खतरनाक आक्रमक जानवरों का सामना किया है। एक तरफ तो जानवरों और इन्सानों के बीच डर का रिश्ता है और दूसरी तरफ गुजरात के चारुतार इलाके के कई गाँवों में मगरमच्छ और इन्सान बिना किसी डर के एक साथ अपनी-अपनी दुनिया में रहते हैं। क्या ऐसी कुछ और जगहें आपने देखी हैं जहाँ जानवर और इन्सान बिना डर के साथ-साथ जी रहे हों?

राजेश: गुजरात में गिर के जंगल हैं जहाँ शेर बब्बर होता है। एशिया में शेर बब्बर सिर्फ गुजरात में मिलता है हिन्दुस्तान में भी और कहीं नहीं है। वहाँ पर कुछ गाँव हैं। जंगल के अन्दर के गाँव तो काफी कम रह गए हैं। काफी गाँव वालों को वहाँ से हटा दिया गया है। पर उनमें से कुछ सेंचुरी के आसपास रहते हैं। तो उनका और शेर का सम्बन्ध ऐसा है जो हमारी सोच से बाहर है। वो एक-दूसरे के प्रति आदर-सम्मान रखते हैं। अभी तक वहाँ कोई भी नरभक्षी मामला नहीं हुआ है। शेर रात को गाँव में घरों के बीच के रास्तों पर निकल जाते हैं। बिना किसी जानवर को छेड़े हुए। इन गाँव वालों और शेर का साथ में रहना अपने आप में एक मिसाल है। गुजरात में ऐसी कई जगह हैं। राजस्थान में बिश्नोई समाज है। उनके खेतों में काले हिरन और चिंकारा जाते रहते हैं। खेत से अनाज व घास खाते हैं। पर लोग उन्हें मारते नहीं हैं। ज़्यादा से ज़्यादा भगाने

की कोशिश करते हैं। ऐसी कई और जगह भी हैं। जैसे कि स्नो लेपर्ड हैं पहाड़ में, लोग इसलिए उनको नहीं मारते हैं क्योंकि बुद्धिज़्म में जानवरों को मारना अच्छा नहीं मानते हैं।

कोई मज़ेदार अनुभव...?

नरेश: कान्हा वन में एक बहुत बड़ा साँभर मर गया था। हम लोग ये सोचकर उत्सुक थे कि हमें कुछ अच्छे फोटो मिल जाएँगे। वहाँ हौवा नाम का एक टाइगर था। महावत भी उससे डरते थे। वो दूर से ही जैसे हाथी को देखता, गुर्राना शुरू कर देता। हमला करता तो महावत भी हाथी से लकड़ी उठवा लेते थे। और जैसे ही वह आता उसे दूर से ही डराने की कोशिश करते थे।

हम लोग टाइगर और साँभर का फोटोशूट करने के इन्तज़ार में बैठे थे। लेकिन टाइगर पानी से निकल ही नहीं रहा था। वहीं कुछ गिद्ध भी बैठे हुए थे खाने के

है। पर यदि उससे सम्बन्धित कुछ सच्ची कहानियाँ हों, जो कि सरल भाषा में लिखी हों, तो इससे अच्छा कोई काम नहीं।

नरेश: जो राजेश कह रहा था मैं उस पर आ रहा हूँ। हमारे बच्चों को हमेशा शेर व दूसरे जानवरों से डराया गया।

"अरे शेर आ रहा है। चुप कर जा। वरना ये हो जाएगा।"

इन्तज़ार में। मैंने उन पर उतना ध्यान नहीं दिया। मैंने सोचा जो भी शॉट मिल रहा है, वो तो लूँ। तो मैं उसकी तैयारी में लग गया। मैंने कैमरा घास में उस तरफ रखा था जहाँ पर शेर बैठा था। जैसे ही मैंने कैमरा शुरू किया टाइगर को शायद कुछ भनक लग गई। उसने ज़ोर-से दहाड़ मारी और फुर्ती से गिद्धों की तरफ दौड़ा। उन्हें पकड़ने की कोशिश में उसने उन्हें भगा दिया। मुझे शॉट तो मिल गया लेकिन उसके बाद उसने जो दहाड़ मारी और वापिस दौड़ा... किस्मत से मैं दूसरी तरफ खड़ा था, अकेला। सब तेज़ी-से दौड़कर आए और पूछने लगे आप ठीक तो हो। मैंने कहा देखो अभी तक तो ठीक हूँ। वो तो किस्मत थी कि वह मेरी तरफ नहीं आया।

आजकल बच्चों के लिए वाइल्डलाइफ सम्बन्धित कई किताबें लिखी जा रही हैं। आपको क्या लगता है वाइल्डलाइफ के नज़रिए से यह काफी हैं या इस पर और काम होना चाहिए?

राजेश: बच्चों के लिए वाइल्डलाइफ किताबें होना बहुत ज़रूरी है। जो बच्चे छोटी कक्षाओं में हैं वो यदि जंगली जानवरों के बारे में पढ़ेंगे नहीं तो हम उनसे क्या उम्मीद कर सकते हैं? उनसे हम कॉन्ज़र्वेशन (संरक्षण) की उम्मीद कैसे रख सकते हैं? बच्चा किताब में देखता है कि स्नो लेपर्ड ऐसा होता है। उसका रंग सफेद होता मैं समझता हूँ हमारी संस्कृति में जो सच्ची कहानियाँ व अनुभव हैं उनको वापिस लाना चाहिए। उनको आजकल की परिस्थितियों से जोड़ते हुए एक दिलचस्प या सच्ची कहानी में बाँधना ज़्यादा रोचक होगा। जो कहानियाँ हों, वो भी अच्छे-से चित्रित हों। क्योंकि अब वो ज़माना नहीं है जब कुछ स्केच बनाकर डाल देते थे। टेक्नोलॉजी काफी आगे बढ़ गई है। इंटरनेट और टीवी की वजह से बच्चों का नॉलेज भी बढ़ गया है। जो जानकारी हमारे पास पहले से है उससे थोड़ा और आगे बढ़कर लिखने की ज़रूरत है। क्योंकि आजकल तो यह है कि कुछ भी गूगल करो और ढूँढ़ लो। शेर ऐसा होता है, इतनी जगह में रहता है, इतने बच्चे देता है, ये करता है, ये खाता–पीता है – यह सब बताने का ज़माना शायद चला गया है। ये सारी जानकारी इंटरनेट में उपलब्ध है। उनको जो नहीं मालूम ऐसे कुछ वाकये बताना ज़रूरी है।

एक सवाल जिस पर हमेशा चर्चा होती है कि इन्सान बड़ा है या प्रकृति – उस पर आपके क्या विचार हैं?

नरेश: हमारे पास बुद्धि ज़्यादा है, बन्दूक ज़्यादा हैं। इसका मतलब ये नहीं कि दूसरे जानवरों को पृथ्वी में रहने का अधिकार नहीं है। उनको भी समान अधिकार है। हमें एक ऐसा माहौल बनाना है जिसमें हम सब साथ रह सकें।

अपना धर्म छोड़ना

अजेन्दर सिंह
चित्र: प्रशान्त सोनी
अनुवाद: कविता तिवारी

मैं तब चालीस साल, पाँच महीने और सत्रह दिन का था। गर्मियों की एक शाम मैं पटना में था। पटना मेरे लिए बिलकुल नया शहर था। यहाँ मुझे कोई नहीं जानता था। इसलिए मैं जो करना चाह रहा था उसे करने के लिहाज़ से यह बिलकुल मुफीद जगह थी। दुकानों पर लगे बोर्ड पढ़ते हुए मैं आगे बढ़ता जा रहा था। और आखिरकार मुझे वो जगह मिल ही गई – बाल कटाने का सैलून।

सैलून मेरे लिए वर्जित जगह थी। लेकिन चालीस सालों में आज पहली बार मैं बाल कटाने वहाँ पहुँच गया था। मेरे लम्बे बाल, बढ़ी हुई दाढ़ी और फैली-सी मूँछें थीं। मैं सिख था – सरदार जी। मेरा एक मन मुझे वहाँ से भागने के लिए कह रहा था। लेकिन दिमाग कह रहा था कि आज मैं यह किस्सा खतम कर ही दूँ। परीक्षा की यह घड़ी कई दिनों से मुझे परेशान कर रही थी।

मेरी परवरिश सिख धर्म में हुई। बड़े होते समय मैंने अपने कई करीबी दोस्तों को 12 साल की उम्र से बाल कटवाते देखा था। हमारे लिए बाल कटाना वर्जित है। फिर भी मेरे अधिकांश युवा सिख दोस्तों ने यदि बाल कटाने का फैसला लिया तो कम उम्र में ही लिया। ऐसा उन्होंने करियर, खेल, बीमारी के चलते या फिर बिना किसी वजह के किया। मैं हमेशा सोचा करता था कि उनके मम्मी-पापा उन्हें ऐसा करने की इज़ाज़त कैसे दे सकते हैं। तब मुझे कभी भी ऐसा करने का लालच नहीं आया।

सिख धर्म मुझे विरासत में मिला था। मेरी माँ बहुत धार्मिक थीं। उन्होंने मुझे सारे धार्मिक ग्रन्थ सिखाए। उनकी इच्छानुसार मैं सब कुछ करता – लगभग हर हफ्ते गुरुद्वारा जाता, कीर्तन करता, सुबह

की अरदास पढ़ता। मैं एक सच्चा सिख था। मैंने हमेशा दाढ़ी रखी, दस्तार (पगड़ी) पहनी – जब मैं युवा था तब भी और बड़े होने पर भी।

मुझे याद है कि कई बार सड़कों पर "ओए सरदार तेरे बारह बज गए" या "जूडी" कहकर आवाज़ लगाई जाती। मुझे 1984 के दंगे भी याद हैं जब केवल पगड़ी वाले सिख होने के कारण हमारी जान पर बन आई थी। इन दंगों के कुछ महीनों बाद तक माँ लड़कियों की तरह मेरी पोनीटेल बनाया करतीं ताकि मैं एक सिख लड़का ना लगूँ। तब मैं आठ साल का था। इन दंगों में मेरा घर भी जला दिया गया था। तब सालों तक मुझे अपनी माँ के साथ शरणार्थियों की तरह दर-दर भटकना पड़ा था। अपने धर्म को मानने की हमें यह कीमत चुकानी पड़ी थी।

सिख आतंकवाद के समय की घटना है। पंजाब में एक बस को पुलिस ने रोका। उस बस में मैं अकेला सिख था। मुझे बस से बाहर आने के लिए मजबूर किया गया। मेरा सारा सामान निकालकर बेदर्दी से सड़क पर फेंक दिया गया। बस में बैठे बाकी लोग अपनी खिड़कियों से यह सब देखते रहे। कुछ भी संदिग्ध ना मिलने पर अपने बिखरे हुए सामान को समेटने के लिए मैं वहाँ अकेला रह गया। मैं शर्म से गड़ा जा रहा था। किसी तरह मैं बस के अन्दर गया। सबकी नज़रें मुझ पर ही टिकी थीं। उस पल बस यही लग रहा था कि या तो मैं मर जाऊँ या कहीं गायब हो जाऊँ। ये सब घटनाएँ कई सालों पहले हुईं। फिर भी मैं एक पगड़ीधारी और दाढ़ीधारी सिख बना रहा।

तो फिर आज 40 साल की उम्र में नाई की दुकान पर मैं अपनी आजीवन पहचान को मिटाने का इन्तज़ार क्यों कर रहा था?

यह बदलाव धीरे-धीरे आया। बचपन से ही मुझे बताया गया था कि सिख धर्म में मूर्तिपूजा नहीं की जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह माना जाता है कि किसी भी साकार रूप में ईश्वर की पूजा नहीं की जा सकती। मन्दिरों और चर्च में मौजूद ईश्वर की मूर्तियों के बारे में नकारात्मक बातें बताई जातीं। यह भी बताया जाता कि हम कभी ईश्वर को इन रूपों में नहीं पा सकते। लेकिन जब मैं गुरुद्वारा गया तो मैंने देखा कि सिखों के पवित्र ग्रन्थ, जिसे सिखों का अन्तिम गुरु माना जाता है, को सुनहरे आसन या पालकी में सजाया गया था। उसे सुन्दर रेशमी कपड़े से ढँका गया था। एक आदमी पूरे समय उसे चंवर ढुलाता रहता था। मूर्तिपूजा को नहीं मानने वाले एक धर्म ने अपने ही धर्म ग्रन्थ को मूर्ति का रूप दे दिया था। मुझे याद नहीं कि मैं किसी ऐसे सिख को जानता हूँ जिसने ग्रन्थ में लिखी बातों पर कभी कोई चर्चा की हो। ग्रन्थ की पवित्रता पर लोगों को बिना किसी सवाल के पूरा विश्वास था। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ग्रन्थ के अन्दर क्या लिखा है। सच तो यह है कि अधिकांश सिखों ने इसे कभी पढ़ा ही नहीं। पूजा की प्रक्रिया धर्म के मूल सिद्धान्त के एकदम उलट थी।

धर्म से जुड़े इसी तरह के कई सवाल मेरे मन में थे। लेकिन शायद ही कभी किसी बुज़ुर्ग ने या किसी सिख गुरु ने मेरे इन सवालों का कोई जवाब दिया हो। लेकिन मैंने अपने इन सवालों को कभी मरने नहीं दिया। मैंने इस बारे में खोजा। तरह-तरह की किताबें पढ़ीं। अज्ञानता कभी भी मेरे लिए सुखद नहीं रही।

जिस नाई को मेरे बाल काटने थे उसने मुझे क्लांइट की कुर्सी पर बैठने को कहा। लेकिन वह कुछ असमंजस में लग रहा था। जैसे यह जानने की कोशिश कर रहा हो कि मेरा इरादा पक्का है ना। मैं नकली आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठ गया। मैंने उसे कहा कि वो कमर के निचले हिस्से तक आते मेरे लम्बे बालों को काट दे। उसने मुझे पूछा कि मैं कौन-सी स्टाइल के बाल रखना चाहता हूँ। मैंने कहा कि मुझे नहीं पता। मैंने पहले कभी कोई स्टाइल नहीं रखी तो तुम अपनी पसन्द की कोई भी स्टाइल कर दो।

मुझे याद आया जब भी कोई व्यक्ति कोई ऐसा काम करता जिसे करना सिख धर्म में मना है तो सज़ा के रूप में उसे गुरुद्वारे में आए सभी लोगों के

जूते-चप्पल साफ करने को कहा जाता। केवल तभी वो पाप से मुक्त होता और उसे धर्म में वापिस स्वीकारा जाता। तो यदि बाल कटवाने के बाद कभी मुझे ऐसा लगता कि मुझसे गलती हो गई और मैं अपने धर्म में लौटना चाहता हूँ तो मुझे अपने धर्मगुरु द्वारा तय की गई सज़ा को पूरा करना होता।

नाई ने कंघी और कैंची ली और बालों को छूने की इज़ाज़त माँगी। क्योंकि किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए सिख के बालों को छूना मना होता है। मैंने 'हाँ' कहा। पहले बाल कटकर नीचे गिर गए। चूँकि मैं कैंची चलने की आवाज़ सुन सकता था मैंने खुद को आईने में देखा। आखिरी बार मैं अपनेआप को इस रूप में आईने में देख रहा था।

अगले पन्द्रह मिनट में लगभग सारे बाल कट गए। मेरी कुर्सी के चारों ओर लम्बे बाल बिखरे हुए थे। मैं हलका महसूस कर रहा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे ऐसा महसूस होगा। दाढ़ी काटते हुए नाई बार-बार पूछ रहा था और काटूँ, और काटूँ। सैलून में मौजूद बाकी सभी लोग अपना काम छोड़कर सिर्फ हम दोनों को देख रहे थे। पूरी दाढ़ी कटने के बाद जब मैंने पहली बार अपना चेहरा देखा तो मुझे अपने गाल दिखाई दे रहे थे। इससे पहले मैंने अपने गाल टीनएज (किशोर उम्र) में कभी देखे थे। मेरे लिए खुद को पहचानना मुश्किल हो रहा था। मैं अपनी उम्र से छोटा लग रहा था।

नाई का काम पूरा हो गया था। मैंने उसका शुक्रिया अदा किया और सैलून में बैठे सभी लोगों का अभिवादन किया। सब कह रहे थे कि मैं अब बिलकुल पहचान नहीं आ रहा हूँ। फिर वो अपने-अपने काम में लग गए।

सामने के दरवाज़े का ताला खोलते हुए मुझे डर था कि मेरी साथी, मोती मुझे पहचानेगी या नहीं। लेकिन दरवाज़ा खोलने पर मुझे देखते ही वो दौड़ते हुए मेरे पास आई और मुझसे लिपट गई। तब मुझे लगा कि भले ही इस दुनिया में कोई मुझे ना अपनाए लेकिन जब तक मेरी प्यारी पालतू मोती मेरे साथ है मैं किसी भी व्यक्ति के फैसले का सामना कर सकता हूँ। और मोती काफी खुश थी क्योंकि वो आसानी से मेरे गालों को चाट सकती थी, अब वहाँ बाल जो ना थे।

आदा पादा किसने पादा....

सुशील शुक्ल
चित्र: कनक शशि

हाथी चलते-चलते पादे
ऊँट पादकर भागे
साँप डाल से लटक के पादे
सोता पेड़ भी जागे

घोड़ा दौड़-दौड़कर पादे
गधे बैठकर पादें
और भेड़िए आहिस्ते से
पता ही चलने ना दें

कौआ उड़ते-उड़ते पादे
तोते आम को खाकर
बकरी चरते-चरते पादे
मुर्गी दड़बे में जाकर

भैंस पादने के वादे को
तोड़-तोड़ के पादे
एक पाद में कई पादों को
जोड़-जोड़ के पादे

जब-जब पाद उठे तो पादो
बिना शरम के पादो
पाद में पाद तुम्हारा हो
अपनी पहचान बना दो...

कल रात मैंने उसे मार दिया

अम्बर
तेरह वर्ष, सागर पब्लिक स्कूल,
रोहित नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश

कल रात मैंने उसे मार दिया। मैं समझ ही नहीं पाई कि वो क्या बोल रहा था। शायद इसीलिए उसकी जान ले ली मैंने।

वह जो रोज़ रात को बाहर आवाज़ करता था, आज अन्दर आ गया था। ठीक मेरे बिस्तर के पास। उसने आधी रात को शोर मचाना शुरू किया। मैंने बहुत इन्तज़ार किया कि वो चुप हो जाए, बहुत कोशिश की कि मैं सो जाऊँ। पर न तो वह बन्द हुआ और ना ही मुझे नींद आ पाई। अन्ततः रात 3 बजे के करीब मैंने उस झींगुर को चप्पल से मार दिया। पर समस्या यह थी कि अब तो नींद भी उड़ चुकी थी और माँ-बाबा दूसरे कमरे में खर्राटे ले रहे थे।

मैं चुपचाप अपने बिस्तर पर जाकर लेट गई और 'झींगुर गा न पाए' कहानी के बारे में सोचने लगी। मैंने सोचा कि क्यों उस कहानी में झींगुर की आवाज़ को संगीत से तौला गया है, जबकि वह कर्कश आवाज़ तो मेरे सिर में दर्द कर रही थी।

पर शायद वह संगीत ही था। ऐसा संगीत जिसे मैं सुन तो सकती हूँ पर समझ नहीं सकती। फिर थोड़ी और गहराई से सोचा तो पाया कि यही तो समस्या है कि जब हम किसी चीज़ को समझ नहीं पाते या उससे सहमत नहीं हो पाते तो हमें वो गलत लगने लग जाती है। और फिर हम न जाने कितने झींगुरों की जान ले लेते हैं। सिर्फ इसलिए कि हमें वो आवाज़ नहीं पसन्द। पर उसे तो अपनी आवाज़ पसन्द ही होगी।

गुलाबी पानी का तालाब

हाल ही में मुम्बई से लगभग 500 किलोमीटर दूर स्थित लोनार तालाब के पानी का रंग बदल गया। वैसे तो यहाँ के पानी का रंग हर साल बदलता है लेकिन पहली बार यह काफी अधिक मात्रा में बदला है। यह कैसे और क्यों हुआ? इस बारे में विशेषज्ञों की राय मानें तो रंग बदलने का कारण खारेपन की कमी या किसी शैवाल का होना हो सकता है। या फिर दोनों का साथ में होना भी हो सकता है। फिलहाल इसके पानी का सैंपल टैस्ट के लिए लैब भेज गया है ताकि हमें पक्के तौर पर पता चल सके कि रंग बदलने का क्या कारण रहा होगा।

इस तालाब की एक और खासियत भी है। कुछ पचास हज़ार साल पहले एक उल्का पिण्ड यहाँ गिरा और यहाँ लगभग एक किलोमीटर चौड़ा कटोरे जैसा गड्ढा (क्रेटर) बन गया। समय के साथ यहाँ जंगल फैल गए और क्रेटर में पानी भर गया। वैज्ञानिकों का अनुमान है ऐसी घटनाएँ 2000 साल में एक बार होती हैं। लगभग 2 किलोमीटर चौड़े और 150 मीटर गहरे लोनार क्रेटर का बनना एक ऐसी ही अनोखी घटना है।

तुम भी जानो

गैस के कुएँ में आग

कुछ दिनों पहले बाघजान, असम में स्थित एक गैस के कुएँ में आग लग गई। इस आग से ना सिर्फ घरों को नुकसान पहुँचा बल्कि पास ही स्थित डिब्रू सैखुवा राष्ट्रीय उद्यान के कई वन्यजीवों को भी अपनी जान गँवानी पड़ी। यह कुआँ ऑइल इंडिया लिमिटेड कम्पनी का है।

आग लगने से कुछ दिन पहले ही इस कुएँ में एक धमाका हुआ था। धमाके के बाद से कुएँ से गैस रिसाव शुरू हुआ। धमाका किस वजह से हुआ और आग कैसे लगी इसका अभी पता नहीं चल सका है। लेकिन यह तो तय है कि तेल और गैस के कुओं में आग लगना प्रकृति के लिए कई मायनों में हानिकारक हो सकता है। इन्सानों को साँस लेने में दिक्कत हो सकती है, वन्यजीव ना सिर्फ आग से झुलसकर बल्कि आग से निकलने वाली खतरनाक गैस के सम्पर्क में आकर भी मर सकते हैं। ऐसी आग के कारण हवा के साथ-साथ ज़मीन और जल भी दूषित हो जाते हैं।

एक और दिक्कत यह है कि हमें पता नहीं कि यह आग कितने दिनों तक जल सकती है। असम में यह दो हफ्तों तक जलती रही। कुछ-कुछ जगहों पर इससे ज़्यादा समय के लिए भी जल सकती है।

नदी बहुत खुश है आजकल।

लॉकडाउन खुलने वाला है।

अनलॉक

शिवचरण सरोहा
चित्र: शुभम लखेरा

खुशी की कल-कल साफ सुनाई देती है। तलहटी के छोटे-बड़े पत्थर साफ पानी में बैठे हुए दिखाई देते हैं। दिन भर पानी में अठखेलियाँ करती हैं मछलियाँ। नदी रोज़ बतियाती है मछलियों से, जलमुर्गियों से, कछुओं से और घड़ियालों से भी। घड़ियाल अपना मुँह खोलकर नदी को दिखाता है कि आजकल वो मछलियाँ नहीं खाता। उसके झूठ पर मन्द-मन्द मुस्कराती है नदी। सब कुछ बड़ी सुन्दरता से चल रहा है।

लेकिन अब कुछ दिनों से उदास है नदी। गुमसुम। बड़ी मछलियाँ पानी में धमाचौकड़ी मचाकर नदी की उदासी तोड़ना चाहती हैं। जलमुर्गियाँ बहुत कोशिश करती हैं कि गुदगुदाएँ नदी को किन्तु नदी का रूखापन नहीं टूटता।

एक दिन घड़ियाल ज़िद कर बैठा। नदी से बोला, "तुम इतनी उदास और परेशान क्यों हो? क्या हुआ? न पहले की तरह मुस्काती हो, न हँसती हो?"

नदी ने गहरी साँस ली और उदास स्वर में बोली, "लॉकडाउन खुलने वाला है।"

नदी के बीच एक कछुआ पंजे में फँसे हुए मास्क से पीछा छुड़ाने के लिए परेशान हो रहा था।

घड़ियाल और नदी की उदासी में कछुए की बेबसी भी घुल रही थी।

हैलो डायरी

सजिता नायर
चित्र: शिवांगी सिंह

हैलो डायरी,

आज संडे था। फिर भी हम सब आज घर पर ही थे। हर संडे की तरह आज भी अम्मा ने नाश्ते में इडली ही बनाईं। टीवी देखते-देखते मैंने और अच्चा ने इडली से भरा कैसरोल कब खतम कर दिया पता ही नहीं चला। अम्मा जैसे ही नहाकर खाने के लिए बैठीं तो देखा कैसरोल खाली था। पहले तो मैं और अच्चा खूब हँसे। फिर बाद में मुझे अम्मा के लिए बुरा लगा।

नाश्ते के बाद मैं सोफे पर बैठकर मस्त आराम से टीवी देख रही थी। तभी अचानक मुझे अपनी चड्डी गीली-गीली सी लगी। मैं जल्दी से बाथरूम में गई ये देखने कि क्या हुआ है। चड्डी निकालकर देखी तो उसमें खून था। मुझे एकदम से याद आया कि पिछले साल ही कुछ दीदियों ने हम लड़कियों को अलग से क्लास में बुलाकर बताया था कि लड़कियों में ऐसा खून निकलना आम बात है। फिर उन्होंने पैड के बारे में कुछ बताया था और एक पैकेट भी दिया था हमें। एक दीदी ने बोला था कि ऐसा जब भी हो तो मम्मी को बताना।

मैंने डरते हुए अम्मा को आवाज़ लगाई पर अच्चा आ गए। मैं उन पर चिल्लाई कि अम्मा को भेजो। अम्मा आईं तो मैंने उन्हें अपनी चड्डी दिखाई। अम्मा हँसने लगीं। मुझे गुस्सा आने लगा। यहाँ बेटी का खून निकल रहा है और इन्हें हँसी आ रही है। उन्होंने बोला कि घबराओ मत, सब ठीक है। मैंने उन्हें उस पैकेट और दीदियों के बारे में बताया। यह भी बताया कि मैंने उसे हरे सूटकेस में बिलकुल नीचे छुपाकर रखा है। वो गईं और एक पैड लेकर आईं। पैड कैसे लगाना है ये समझाते हुए बोलीं कि घबराओ मत, ये तो हर लड़की को होता है।

फिर वो अच्चा के पास जाकर कुछ खुसुर-पुसुर करने लगीं। थोड़ी देर बाद दोनों फोन पर सबसे बस यही बोल रहे थे, “पायल बड़ी हो गई”, “पायल बड़ी हो गई”। मुझे अब सोफे पर बैठने में डर लग रहा था तो मैं पूरे घर में इधर-उधर घूम रही थी। मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था और समझ भी नहीं आ रहा था कि ये सबको कॉल करके क्या बता रहे हैं – न तो मेरी हाइट बड़ी है, न ही उम्र। तो फिर ऐसा क्यों बोल रहे हैं, पता नहीं। मुझे शर्म भी आ रही थी। पेट में हल्का-हल्का दर्द हो रहा था तो मैं गुस्से में बिस्तर पर लेटे-लेटे ही सो गई।

उठी तो देखा मौसी-मौसाजी घर आए हुए थे। मौसी ने मुझे नए-नए कपड़े गिफ्ट किए। मेरा बर्थडे नहीं था, फिर भी। उसके बाद दो मामा-मामी, छोटे नाना-नानी, बड़े नाना-नानी सबने मुझे या तो पैसे या फिर कपड़े गिफ्ट किए। मुझे ये सब क्यों मिल रहा था पता नहीं। लेकिन मुझे अब मज़े आ रहे थे। शायद 'बड़ा' होकर मैंने कुछ अच्छा काम कर दिया था।

रात को अम्मा-अच्चा ने बोला कि ऐसे में मैं किचन के अन्दर नहीं घुस सकती। और मुझे अब एक अलग कमरे में रहना होगा जहाँ मुझे अलग-से थाली में खाना देंगे। यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं रोने लगी। अच्चा मुझे देखकर हँसने लगे और मेरे पास आकर बोले, "मज़ाक कर रहा था बेटा। लेकिन पहले के ज़माने में ऐसा ही होता था। हम ये सब कुछ नहीं मानते। लेकिन हाँ, तुम भगवान के कमरे में नहीं जा सकतीं।" मैंने पूछा, "क्यों?" तो उन्होंने कहा, "क्योंकि अभी तुम अशुद्ध हो और भगवान को हमेशा शुद्ध ही रखना चाहिए। नहीं तो कुछ बुरा हो जाएगा।"

काफी अजीब दिन था आज का। मुझे नहीं पता था कि मेरे अन्दर से खून निकलने से इतना कुछ होगा। मुझे काफी कुछ तो अभी भी समझ नहीं आया खास तौर से ये कि मैं अशुद्ध क्यों हूँ। वो दीदी ने तो ऐसा कुछ भी नहीं बताया था। चलो अब मैं काफी थक गई हूँ और पेट भी दुख रहा है। तुमसे कल बात करती हूँ।

बाए।

चक मक

"तुम भगवान के कमरे में नहीं जा सकतीं।" मैंने पूछा, "क्यों?" तो उन्होंने कहा, "क्योंकि अभी तुम अशुद्ध हो और भगवान को हमेशा शुद्ध ही रखना चाहिए। नहीं तो कुछ बुरा हो जाएगा।"

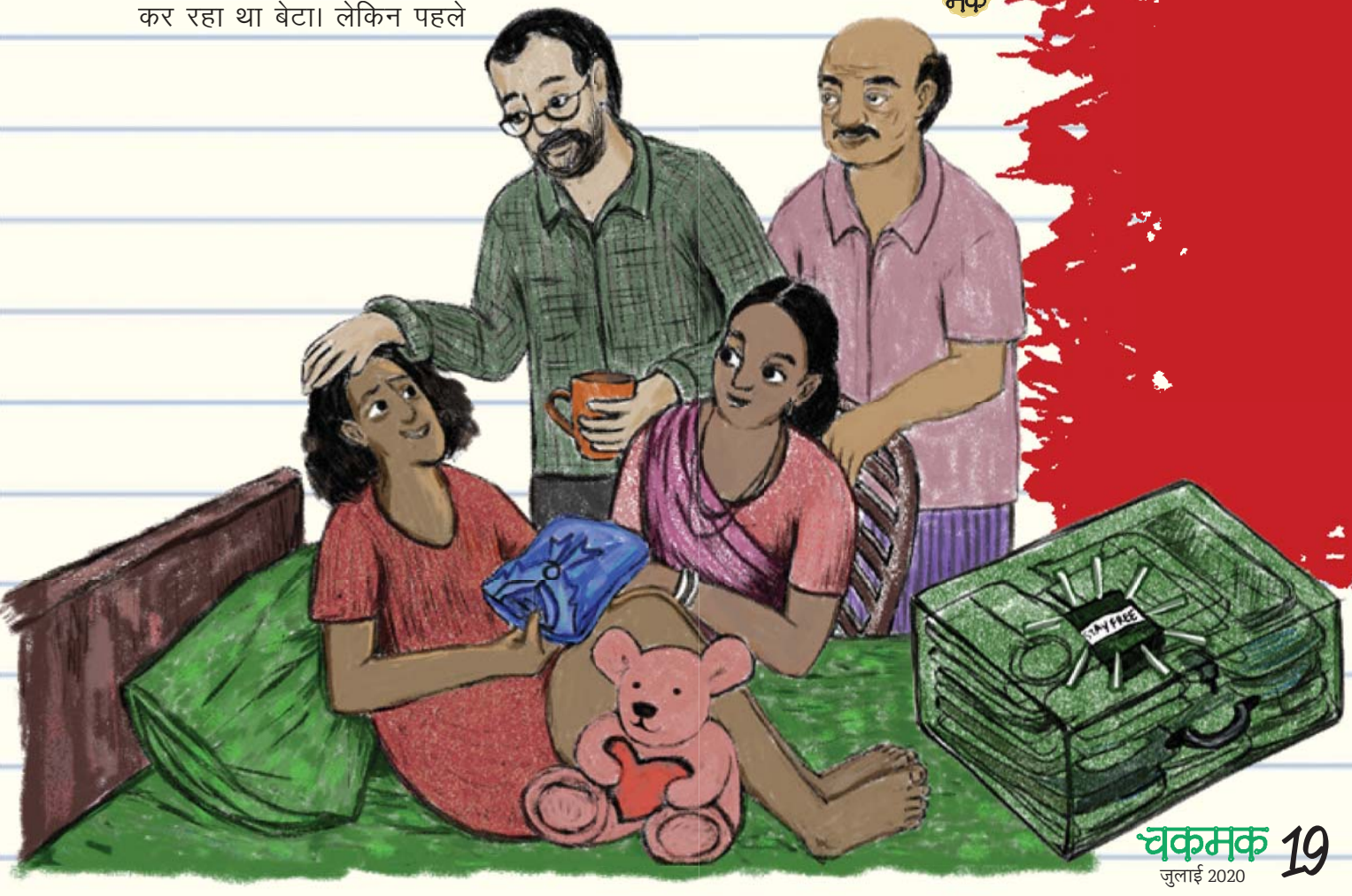

टिड्डियाँ और हम

टिड्डी दल

अप्रैल-मई में तुमने भारत में टिड्डी दलों के हमले के बारे में सुना होगा। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों से होते हुए पहले ये मध्यप्रदेश के कई ज़िलों में और अब आगरा-दिल्ली में दिख रहे हैं। लाखों टिड्डियों के ये दल एक ही दिन में फसल, पेड़-पौधों का भारी नुकसान करते हुए निकल जाते हैं। टिड्डियों की समस्या सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि अफ्रीका के अधिकांश हिस्सों, पश्चिमी एशिया, ईरान और ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्सों में भी है।

ये दल कैसे बनते हैं?

काफी समय से कीट विज्ञानी यह जानते हैं कि टिड्डी स्वभाव से एकाकी प्रवृत्ति की होती हैं यानी कि अकेले रहती हैं। एक-दूसरे के साथ घुलती-मिलती नहीं हैं। फिर भी जब फसल कटने का मौसम आता है तो एकाकी स्वभाव की ये टिड्डियाँ आपस में एकजुट होकर पौधों पर हमला करने के लिए झुण्ड रूपी सेना बना लेती हैं। इसका कारण क्या है?

जब ये एकाकी टिड्डियाँ भोजन की तलाश में संयोगवश एक-दूसरे के पास आ जाती हैं और संयोगवश एक-दूसरे को छू लेती हैं तो इनका व्यवहार बदल जाता है। और ये एक साथ आना शुरू कर देती हैं। और यदि और अधिक टिड्डियाँ पास आती हैं तो इनका दल बनना शुरू हो जाता है। छोटा-सा कीट आकार में बड़ा हो जाता है, और उसका रंग-रूप बदल जाता है। इस परिवर्तन में टिड्डियों के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण रसायन है – सिरोटोनिन। सिरोटोनिन मिज़ाज (मूड) और सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करता है।

इनसे बचाव कैसे हो?

आम तौर पर टिड्डी दल से निपटने का तरीका झुण्ड को ढूँढ़-ढूँढ़कर टिड्डी दल पर कीटनाशकों का छिड़काव करना है। लेकिन कैसा हो अगर टिड्डियों के दल ही न बनें तो? अब हमारे पास इस टिड्डी दल को बनने से रोकने का एक सम्भावित तरीका है – दल बनना शुरू होने पर सिरोटोनिन अवरोधक रसायनों का छिड़काव करना। इसे आज़माकर तो देखना चाहिए।

तब तक हम टिड्डी दल द्वारा नुकसान को कम करने के लिए पाकिस्तान में अपनाए गए एक तरीके को अपना सकते हैं। टिड्डियाँ रात को गुच्छों में

खेतों में रुकती हैं। तब इन्हें आसानी से पकड़ा जा सकता है। पाकिस्तान में सरकार किसानों से इन्हें खरीदकर पोल्ट्री फीड बना रही है। इससे किसान इन कीटों द्वारा किए गए नुकसान की कुछ हद तक भरपाई कर पाते हैं।

टिड्डी पोषण

जिस तरह टिड्डियाँ मुर्गे-मुर्गियों के लिए खाना बन सकती हैं, वे हमारे लिए भी पोषण बन सकती हैं। टिड्डियों में भरपूर प्रोटीन है – एक किलो टिड्डियों में अन्य जानवरों के एक किलो मांस से दुगुना प्रोटीन है। साथ ही इन्हें पालना भी काफी आसान है – किसी गैरिज या कमरे में, छत पर ये बड़ी-बड़ी तादाद में डिब्बों और बर्तनों में पाली जा सकती हैं। इन्हें ज़्यादा पानी की भी ज़रूरत नहीं पड़ती है। तो बकरियाँ और मवेशी पर्यावरण पर जितना दवाब डालते हैं उनसे काफी कम दबाव इन कीटों को पालने से होता है।

एक अनुमान है कि आज की तारीख में दुनिया भर में तीन करोड़ से भी ज़्यादा लोग कीट खाते हैं। इनमें टिड्डियाँ भी शामिल हैं। लेकिन ये सब कीटों को पकड़कर खाते हैं। इनको पालते कुछ ही लोग हैं। इसका एक कारण यह है कि कीटों को खाने से कई लोग कतराते हैं। लेकिन लोगों की यह सोच बदल रही है। पिछले कुछ सालों से अमेरिका में टिड्डियों से बना प्रोटीन पाउडर, आटा और प्रोटीन पट्टियाँ इत्यादि मिलने लगी हैं।

दुनिया की बढ़ती आबादी के साथ-साथ बढ़ते पोषण की माँग का एक जवाब शायद टिड्डियों के पास है।

बन्दरों से मुलाकात

बन्दरों की बातें

हमारी ही तरह बन्दर भी अपने दाँत दिखाते हैं। लेकिन सतर्क रहना, अगर कोई बन्दर तुम्हें देखकर मुस्कराए तो वो दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ा रहा। दाँत दिखाना बन्दरों में गुस्से का लक्षण है।

आम तौर पर बन्दर समूहों में रहते हैं, अपने परिवार वालों और दोस्तों के साथ। कोई एक बन्दर इस समूह का सरदार होता है जिसे विरोधी अक्सर चुनौती देते रहते हैं।

फील्ड डायरी के लिए

अपने महल्ले में काले मुँह वाले लंगूर या लाल बन्दर की किसी टोली को देखने की कोशिश करना। ये अक्सर तुम्हें खाने की चीज़ों के आसपास दिखेंगे – जैसे किसी फलदार पेड़ या कचरे के ढेर पर, मन्दिरों में, फ्रिज व रसोई में खाना खोजते हुए तुम्हारे घरों में।

बन्दरों को कुछ समय तक ध्यान से देखो। उनके खास गुणों को अपनी फील्ड डायरी में लिख लो। एक-दूसरे से वे किस तरह का व्यवहार करते हैं – छोटे बन्दर बड़े बन्दरों के साथ, बच्चे टोली के अन्य सदस्यों के साथ इत्यादि।

क्या तुम टोली में से कुछ बन्दरों को अलग-अलग पहचान पाए? इनमें से दो-तीन बन्दरों को कुछ देर देखते रहना – किन लक्षणों के आधार पर तुम उनमें फर्क कर पाए? अपने इस अनुभव के बारे में हमें लिख भेजना।

क्विज़ टाइम

चित्रों में दिए बन्दरों को उनके नामों से मिलाओ।

(क) नीलगिरी लंगूर – पश्चिमी घाटी और उसके आसपास के पहाड़, कोडगू और उसके दक्षिणी इलाके में पाए जाते हैं।

(ख) लायन टेल्ड मकाक – ये पश्चिमी घाटी में ही दिखते हैं।

(ग) स्टम्प टेल्ड मकाक – ब्रह्मपुत्र नदी की दक्षिणी इलाकों में और असम से पूर्व की तरफ रहते हैं।

(घ) अरुणाचल मकाक (मुंज़ाला) – अरुणाचल प्रदेश में ही पाए गए हैं।

तुम किताबों या इंटरनेट की मदद ले सकते हो, अपनी याददाश्त की भी अगर तुमने किसी जंगल, हाइवे के बगल में या फिर चिड़ियाघर में इन्हें देखा हो।

प्रतियोगिता

क्विज़ के अपने जवाब और बन्दरों के अपने अवलोकन हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

चकमक

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

बन्दरों की चटर-पटर

बन्दर अक्सर बहुत ही बड़ी टोलियों में रहते हैं। इन टोलियों में भी वो छोटे-छोटे गुट बना लेते हैं और अन्य बन्दरों की तुलना में कुछ खास बन्दरों के साथ ज़्यादा समय बिताते हैं। वो खाना खोजने, दुश्मनों से अपने समूह को बचाने और बच्चों की देखरेख में एक-दूसरे की मदद करते हैं। ये सब करते हुए वो स्पर्श, इशारों, शक्ल और आवाज़ों के ज़रिए आपस में संवाद करते हैं। जीव वैज्ञानिकों ने एक बड़ी ही दिलचस्प बात देखी है। कुछ किस्म के बन्दर विभिन्न आवाज़ों को कुछ उसी तरह फेर-बदलकर बातें करते हैं जिस तरह हम शब्दों से वाक्य बनाते हैं!

nature conservation foundation
science for conservation

इश्कु का मस्सा

नेहा बहुगुणा

चित्र: हबीब अली

पढ़ाई करते-करते अनायास ही इश्कु का हाथ अपने माथे पर चला गया। उसने महसूस किया कि जहाँ उसका माथा खतम और बाल शुरू होते हैं वहाँ एक मस्सा है। बहुत बड़ा तो नहीं है लेकिन इतना है कि उसके अस्तित्व को स्वीकारा जाए। अब चूँकि इश्कु ने उसे छू लिया था तो बार-बार उसका हाथ वहीं जाने लगा।

एक रात सपने में उसने देखा कि उसका मस्सा कंचे जितना बड़ा हो गया है। और बढ़ता ही जा रहा है। वह डरकर उठ बैठी। अपना माथा छुआ तो मस्सा वहीं था, जस का तस। इश्कु के जी में आया कि उसे नाखून से उखाड़ फेंके। मगर मस्सा कहाँ इतनी आसानी से निकलने वाला था।

अगले दिन उसने मस्से से छुटकारा पाने के नुस्खे तलाशना शुरू कर दिया। किसी ने कहा कि टूथपेस्ट लगा लो। उसने लगाया। कोई फायदा नहीं हुआ। किसी ने कहा कि सिरका डालकर फिटकरी से रगड़ लो। मगर यह भी काम नहीं आया। फिर इधर-उधर के तमाम नुस्खे आज़माए गए। लेकिन सब बेकार।

आखिरकार इश्कु की काफी भरोसेमन्द एक बुढ़िया ने उसे एक अचूक नुस्खा बताया। उसने कहा, "एक घोड़े के बाल से मस्से को रात भर बाँधो और सुबह अदरक की नोंक बनाकर मस्से को काट डालो। ऐसा जाएगा कि दोबारा वापिस नहीं आएगा।"

इश्कु को लगा कि नुस्खा है तो बड़ा ऊटपटाँग लेकिन हो सकता है यही कारगर हो। उसने अपनी स्कूटी निकाली और घोड़े की तलाश में निकल पड़ी। अब घोड़े कुत्ते तो हैं नहीं कि यूँ ही मिल जाएँ। तो इश्कु को बड़ी मशक्कत करनी पड़ी। लेकिन दूर-दूर तक उसे कोई घोड़ा नहीं मिला। वो सोचने लगी कि कौन-से भगवान को याद करूँ कि घोड़ा मिल जाए। उसे विष्णु का हयग्रीव अवतार याद आया। मगर हयग्रीव तो राक्षस भी था। तो इश्कु ने यह सोचकर उसे याद नहीं किया कि कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ। फिर उसे याद आया कि घोड़ा किसी बारात में मिल सकता है। शाम ढलने को थी। उसने सोचा शायद कोई बारात मिल जाए। इसी उम्मीद में अब इश्कु शादी वाली जगहों की

ओर चल पड़ी। किस्मत से उसे एक बारात मिल भी गई।

वह बारात के पास गई तो उसका सर गरमा गया। तभी उसे दूल्हा और उसके नीचे चलता घोड़ा दिखाई दिया। उसे लगा कि भगवान साक्षात उसकी मदद करने के लिए चले आ रहे हैं। इश्कु ने स्कूटी पार्क की और बारात में घुस गई। इससे पहले कि वह अपने निशाने तक पहुँचती कुछेक बाराती नाचते हुए आए और उसे भी साथ में नचाने लगे। न चाहते हुए भी इश्कु कन्धे उचका-उचकाकर नाचने लगी। उसे मज़ा तो नहीं आया, पर हाँ अब्दुल्ला वाली फीलिंग ज़रूर आ गई जो कि बेगानी शादी में दीवानी बनी फिर रही थी।

नाचते हुए बाराती उसे घोड़े से दूर ले जा रहे थे। उसे अपनी मंज़िल आँखों से ओझल होती प्रतीत हुई। लेकिन फिर इश्कु ने गहरी साँस भरी और सीधे घोड़े की ओर चल दी। वहाँ पहुँचते ही उसने बड़ी आशा भरी नज़रों से घोड़े को देखा और ज़ोर-से उसकी पूँछ खींची। घोड़ा उछलकर दूसरी ओर भागा। बारात में हबड़-तबड़ मच गई और धक्का-मुक्की में दूल्हा सड़क पर आ गिरा। सब उसे उठाने और घोड़े को लाने के लिए हो-हल्ला करने लगे। इस बीच इश्कु भी सड़क पर गिर गई और बारात से अलग हो गई।

इश्कु ने अपना हाथ खोलकर देखा तो उसके हाथ में घोड़े के एकाध बाल आ ही गए थे।

"एक घोड़े के बाल से मस्से को रात भर बाँधो और सुबह अदरक की नोंक बनाकर मस्से को काट डालो। ऐसा जाएगा कि दोबारा वापिस नहीं आएगा।"

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—
लॉकडाउन खुलने के बाद तुम सबसे पहले क्या करना चाहोगे, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें अपने जवाब भेजे। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

हर महीने के क्यों-क्यों का सवाल हम बच्चों को ईमेल से भेजते आ रहे हैं। इस अंक से हम यह सवाल इन पन्नों में भी देंगे और हमें उम्मीद है कि तुम सब अपने-अपने जवाब हमें भेजोगे।

अगली बार के लिए सवाल है —
इस दुनिया को किसने बनाया है, और क्यों?

अपने जवाब हमें chakmak@eklavya.in पर मेल कर सकते हो या 9753011077 पर व्हाट्स ऐप भी कर सकते हो। चाहो तो हमें डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है—
चकमक, एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026. मध्य प्रदेश

मेरी मम्मी सिस्टर हैं। वे लाइफलाइन हॉस्पिटल में काम करती हैं। मेरी मम्मी रोज़ हॉस्पिटल जाती हैं। लॉकडाउन है लेकिन उन्हें छुट्टी नहीं मिलती। कोरोना जल्दी जाना चाहिए क्योंकि मैं मेरी मम्मी के साथ रहना चाहता हूँ। लॉकडाउन खुलने के बाद मैं अपनी मम्मी के साथ ज़्यादा समय बिताना चाहता हूँ।

आदेश काटकर, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान,
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

लॉकडाउन खुलने के बाद एक तो हम इस महामारी के बारे में थोड़ा गहराई से जानना चाहेंगे क्योंकि अभी तो सब इसके अलग-अलग कारण बताते हैं। अपने दोस्तों व टीचर्स से मिलना चाहेंगे। सिलाई करना चाहेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा सेनिटरी नैपकिन बनाएँगे। क्योंकि लॉकडाउन की वजह से सामान नहीं मिल रहा है तो हम लोग बना नहीं पा रहे हैं। इस समय ज़्यादातर महिलाएँ व लड़कियाँ पीरियड्स को लेकर दिक्कतों का सामना कर रही हैं। लॉकडाउन की वजह से इस बार ईद पर हमें नए कपड़े भी नहीं मिले। तो लॉकडाउन खुलने के बाद हम कपड़े भी खरीदेंगे।

शकीला बानू, स्वतंत्र तालीम, रामदुआरी सेंटर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सबसे पहले मैं पार्क जाऊँगी साइकिल चलाने के लिए। और फिर नीचे दोस्तों के साथ फुटबॉल खेलूँगी क्योंकि घर में अकेले नहीं खेल सकती हूँ।

कीर्तिका, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हौज खास, नई दिल्ली

जब मेरे पापा कमाएँगे तो सबसे पहले मैं सेब और तरबूज खाऊँगी। फिर मैं खूब खेलूँगी। फिर और सेब खाऊँगी क्योंकि सेब खाने से ताकत मिलती है। फिर मैं साग-सब्ज़ी बनाऊँगी।

ऐश्वर्या, तीसरी, एसडीएमसी स्कूल, हौज खास, नई दिल्ली

लॉकडाउन खुलते ही सबसे पहले अपने शहर जाऊँगी। मम्मी-पापा, भाईजी से मिलूँगी। हम बाज़ार जाएँगे। एक ही दिन में पूरा शहर घूमना चाहूँगी। आखिर इतने दिनों का कोटा जो पूरा करना है। और हाँ, मेरा गोलगप्पा, उसको कैसे भूल सकती हूँ। पहले तो हफ्ते में एक-दो बार गोलगप्पा खा ही लेती थी। पर इस लॉकडाउन ने सब कुछ खतम कर दिया। दो महीनों से गोलगप्पे की शक्ल तक नहीं देखी है। न जाने ठेले पर पड़े-पड़े कैसा हो गया होगा? उसके बिना न मेरा और न मेरे पेट का मन लगता है। कब मोदी अंकल लॉकडाउन हटाएँगे और हम उसी ठेले पर चटपटा गोलगप्पा खाएँगे? सारा हिसाब करके रखूँगी। और जैसे ही लॉकडाउन खुलेगा, तब तो बस नॉनस्टॉप गोलगप्पा चलेगा।

निशा गुप्ता, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

मुझे लगता है कि लॉकडाउन में सबसे ज़्यादा मुश्किल हम बच्चों की है क्योंकि दोस्तों से मिल नहीं सकते, बाहर जाकर खेल नहीं सकते, स्कूल जा नहीं सकते। मैं लॉकडाउन खुलने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा हूँ। सबसे पहले तो अपने दोस्तों और सहपाठियों से मिलना चाहूँगा क्योंकि मैंने कई दिनों से उनसे बात नहीं की है और देखा भी नहीं है उन्हें। मैं घर में बैठकर ऊब चुका हूँ। मुझे अपना स्कूल और स्कूल का मैदान याद आ रहा है। क्रिकेट खेलना चाहता हूँ। पार्क में जाकर चक्कर लगाना चाहता हूँ। वहाँ की ताज़ी हवा में साँस लेना चाहता हूँ। लॉकडाउन के पहले चिड़ियों की आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। लेकिन अब चिड़ियों और कोयल की आवाज़ साफ सुनाई देती है।

सागर रजक, आठवीं, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

जब लॉकडाउन खुलेगा तो वो दिन मेरे लिए किसी स्वतंत्रता दिवस से कम नहीं होगा। लॉकडाउन के इस समय में एक पिंजरे में बन्द पंछी की क्या भावनाएँ होंगी, यह मैं पहली बार समझ पाई हूँ। लॉकडाउन खुलने के बाद मुझे वैसा ही एहसास होगा जैसे पिंजरे में बन्द पंछी को छोड़ने के बाद अपनी पहली उड़ान पर होता है। सबसे पहले तो मैं खुशी से चिल्लाऊँगी, नाचूँगी। घर से बाहर घूमूँगी-फिरूँगी। मन तो है कि दो-तीन दिन घर आऊँ ही नहीं क्योंकि बीते दो महीनों से घर पर बैठकर और घरवालों की सूरत देख-देखकर तंग आ गई हूँ। मैं बिन्दास सड़कों-गलियों में घूमूँगी और अपनी सहेलियों से जाकर मिलूँगी। उनके साथ पेट भर गोलगप्पे खाऊँगी। जब मैं खुली हुई दुकानें, सड़के-गलियाँ देखूँगी, तभी मेरी आँखों को सुकून मिलेगा। पूरे फलटण का चप्पा-चप्पा छानना चाहूँगी क्योंकि कई दिनों से अपने शहर को देखा नहीं।

श्रिया पाटिल, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

जब लॉकडाउन खुलेगा तो हम वॉटर पार्क घूमने जाएँगे। हम अपने स्कूल जाएँगे। वहाँ मेरी नई क्लास होगी। क्लास में और नए बच्चे आएँगे। मेरा खेल का मैदान साफ हो जाएगा। और मेरी नई मैम भी आएँगी।

हुदा, दूसरी, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

भाग – 3

बोरेवाला

मूल तेलुगू कहानी: जयश्री कलाथिल
चित्रांकन: राखी पेशवानी
अनुवाद: शशि सबलोक

यह कहानी अन्वेषी द्वारा विकसित की गई डिफरेंट टेल्स का हिस्सा है। डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं – ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है।

अब तक तुमने पढ़ा:

अनु की गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। चार महीने पहले ही उसकी सजिचेची की मौत हो जाती है। तब से अम्मा उदास रहने लगती हैं और अच्चन भी घर में कम ही दिखाई देते हैं। पहले तो अनु फटी-पुरानी बोरियों के थेगड़ों को सिलकर पहनने वाले चाकप्रान्दन से डरती है। उसे खाने के लिए भी कुछ नहीं देती। पर दो-तीन बाद जब वो दुबारा आता है तो वह हिम्मत करके उसे खाना-पानी देती है और अच्चन के घर आने का इन्तज़ार करने लगती है। हमेशा की तरह अच्चन देर रात घर लौटते हैं। अनु सजिचेची को याद करते हुए रोने लगती है और अच्चन उसे चुप कराकर सुला देते हैं।

अब आगे...

आज के दिन की शुरुआत बड़ी खूबसूरत थी। अम्मा मुझ से पहले जाग गई थीं। और इधर-उधर कुछ कर रही थीं। अच्चन ने हमारे साथ नाश्ता किया। वे आपस में बहुत बातें नहीं कर रहे थे। मैंने सब कुछ सामान्य बनाए रखने की कोशिश में रशीदा के बारे में बताया। उसके एर्नाकुलम जाने के बारे में, और जादुई लड़की डेज़ी की अपनी नई कहानी के बारे में भी। मैंने उन्हें बताया कि अब मेरा अगला काम बगीचे की सफाई है। वे कुछ बोले नहीं। बस सिर हिलाते रहे। मुस्कराते रहे।

फिर मैंने चाकप्रान्दन के बारे में बताया कि वह खाने के लिए आया था। यह सुनकर अच्चन के कान अचानक खड़े हो गए।

"क्या उसने कुछ कहा?" उन्होंने पूछा।

"न, उसने बस खाया और चला गया।"

"वैसे तो वो कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। पर फिर भी उसके बहुत नज़दीक मत जाना। खाना दो और तुरन्त अन्दर आ जाओ और दरवाज़ा बन्द कर लो।"

नाश्ता खतम होते ही मैं रशीदा के घर की ओर दौड़ पड़ी। एर्नाकुलम जाने से पहले मैं उससे मिलना चाहती थी। मैंने उससे *बालरमा* की पूरी सीरीज़ माँगी। जब वो यहाँ नहीं होगी तो मेरे पास पढ़ने के लिए बहुत सारा माल-मसाला होगा। उसने उनके साथ रूसी लोककथाओं की एक रंगीन किताब भी झोले में रख दी। यह किताब उसे उसके भाई ने दी थी। किताब जगह-जगह से फटी हुई थी। उसका कवर भी नहीं था। फिर भी वो अच्छी लग रही थी। मैंने रशीदा को बाय कहा और किताबों का भारी झोला उठाकर घर की ओर चल दी। अम्मा अभी भी जगी हुई थीं। तो मैंने पूछ लिया मेरे साथ बगीचा साफ करना है?

किताबें पढ़ने, कहानियाँ लिखने के बाद मेरा तीसरा सबसे पसन्दीदा काम था बागवानी करना। पहले अम्मा, सजिचेची और मैं तीनों मिलकर बगीचे में काम करते थे। अच्चन को इसमें बहुत मज़ा नहीं आता था, पर वो हमारे लिए अपने दोस्तों के घर से कलमें और बीज ले आया करते थे। घर के आगे वाले बाड़े में गुलाब, गुड़हल, मोगरा, *मनदारम*, *तेच्ची* और *ओड़िचुट्टी* के फूल थे। इसके अलावा टमाटर, फलियाँ, भिण्डी और मिर्चियाँ भी थीं।

बगीचे में जगह-जगह जंगली घास उग आई थी। अम्मा ठीक होतीं तो ऐसा कभी न होने देतीं। पर आज वो बरामदे में बैठीं मुझे घास उखाड़ते देखती रहीं।

फिर अम्मा और मैंने रसम-चावल खाया। दोपहर भर मैं रूसी कहानियाँ पढ़ती रही। एक कहानी थी एक लड़के और सालमन मछली की। उस लड़के के माँ-बाप

नहीं थे। वो अपनी चाची के साथ रहता था। चाची उस पर बहुत ज़ुल्म ढाती थीं। वो उससे घर के सारे काम करातीं। एक दिन उस लड़के ने नदी से सालमन मछली पकड़ी। सालमन ने कहा, "अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें कुछ खास शक्तियाँ दूँगी।" लड़के ने मछली को वापिस पानी में छोड़ दिया। अब जब उसे कुछ चाहिए होता तो वो कहता, "यह मेरी इच्छा और सालमन का हुक्म है," और वो बात पूरी हो जाती। वो कहता, "यह मेरी इच्छा है और सालमन का हुक्म है कि सारे घड़े पानी से भर जाएँ," और घड़े जादुई ढंग से पानी से भर जाते। अब उसे बर्फ से ढँके पहाड़ों पर पानी नहीं ढोना पड़ता। सो चाची अब उस पर किसी बात पर नाराज़ न होतीं।

काश, मैं भी ऐसी कहानियाँ लिख पाती! पर देखो मेरी हीरोइन डेज़ी अभी भी मेरी किताब के पेज 33 पर बैठी है, बिना किसी काम के। काश मुझे भी सालमन मछली ऐसी जादुई शक्तियाँ दे जाती। पर मैंने तो कोई सालमन देखी भी नहीं है।

शाम को अम्मा ने कहा कि उन्हें बहुत थकान महसूस हो रही है और वो सोने चली गईं। मैंने खूब सोचा कि क्या ऐसा करूँ कि वो मेरे साथ देर तक रहें। पर कुछ सूझा ही नहीं। सजिचेची को पता होता था कि ऐसे मौकों पर क्या किया जाना चाहिए। पर जब वो थी अम्मा दिन में कभी सोती भी नहीं थीं, जब तक कि वो बीमार न हों। और बीमार वो पड़ती नहीं थीं। पर चलो, इतनी तो तसल्ली है कि आज तकरीबन पूरे दिन वो सोई नहीं।

सात बजे के करीब मैंने रसोई की खिड़की से बाहर झाँका। चाकप्रान्दन का कहीं अता-पता नहीं था। मैंने उसके लिए एक प्लेट में खाना निकालकर रख दिया था। पर जैसे ही मैं टीवी चालू करने को हुई मैंने उसकी आवाज़ सुनी।

मैंने दरवाज़ा खोल प्लेट उसकी ओर बढ़ा दी। उसने खाना अपनी प्लेट में पलटा और वहीं बैठकर खाने लगा। मैं दरवाज़े के पास ही अन्दर की ओर बैठकर उसे देखने लगी। दो-चार ग्रास खाने के बाद उसने कहा, "तुम अनीता ही हो ना?"

मैंने कहा, "हाँ। पर सब मुझे अनु बुलाते हैं।"

"मैं तुमको अनुक्कुट्टी बुलाऊँगा," "तुम कितने साल की हो?"

"तीन महीने बाद ग्यारह की हो जाऊँगी।"

"तुम्हें मेरा नाम पता है?" उसने पूछा।

"चक्कू...नहीं," मैंने कहा, "मुझे नहीं पता।"

वो मुस्कराया। "सब मुझे चाकप्रान्दन पुकारते हैं। पर ये मेरा नाम नहीं है। मेरा नाम नारायणन है।"

नारायणन। वल्यअम्मा के पति का नाम भी यही था। चाकप्रान्दन को नारायणन के रूप में सोचना भी अजीब था। मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहती थी। पर समझ नहीं आ रहा था कि पूछूँ या नहीं। फिर सोचा पूछ ही लेती हूँ...

"तुम्हारा घर नहीं है? कहाँ है?"

"हम्मममम घर," चाकप्रान्दन ने सिर उठाकर मेरी ओर देखा। "होता था मेरा एक घर। अब नहीं है।"

"क्यों नहीं है?"

चाकप्रान्दन, ना ना ना नारायणन – थोड़ी देर के लिए कुछ नहीं बोला। बस अपनी प्लेट को घूरता रहा। "कभी-कभी घर रहने की सबसे अच्छी जगह नहीं होता।" उसने कहा। फिर उसने एक गहरी साँस ली और मुझे देखने लगा, "तुम्हारे अम्मा-अच्चन कहाँ हैं?"

"अच्चन अभी तक नहीं आए और अम्मा बीमार हैं। सोई हुई हैं।"

"क्या हुआ उन्हें?"

मुझे समझ नहीं आया कि सजिचेची की मौत के बारे में बताऊँ या नहीं। क्योंकि जब भी सजिचेची का ज़िक्र आता था लोग फुसफुसाने और सिर हिलाने लगते थे। "वो दुखी हैं।" मैं बोली।

"क्या हम सभी कभी न कभी दुखी नहीं होते?" वो बोला। "तुम उनका खयाल रख रही हो ना। तुम तो बहुत दिलेर लड़की हो।"

वो मुझे दिलेर समझता है सुनकर मैं बहुत खुश हुई। "बस वो तो..." मैंने कहना शुरू किया। "मैं तो बस यही चाहती हूँ कि वो पहले जैसी हो जाएँ। काम पर जाएँ, मेरे साथ खेलें – बस सब कुछ पहले जैसा हो जाए।"

चाकप्रान्दन ने खाना खतम किया और दीवार से टिककर पानी पीने लगा। "हाँ...होता है कभी-कभी। उदासी देर तक नहीं जाती। पर तुम देखना, जल्दी ही वो एकदम ठीक हो जाएँगी।"

उसकी आवाज़ बहुत धीमी थी। बीच-बीच में तो सुनाई ही नहीं दे रही थी। मैंने उसे रशीदा के दादा से बातें करते देखा था। पर मैं उससे पहली बार बात कर रही थी। इससे पहले मैंने उसकी आवाज़ तक नहीं सुनी थी।

"तुम्हारे बच्चे हैं?" कुछ देर बाद मैंने पूछा।

"हाँ... है। एक बेटा है। छोटा-सा है। उसका नाम है सोमन।" फिर वो सिर हिलाकर हँसने लगा। "पर शायद अब वो उतना छोटा नहीं रहा। मैंने उसे बहुत अर्से से नहीं देखा।"

मुझे याद आया जब अच्चन दुबई चले गए थे तो सजिचेची और मुझे उनकी बहुत याद आती थी। उनसे भी रहा नहीं गया और वो तीन महीने में ही लौट आए थे।

"तुम्हें भी दुख होता होगा," मैंने कहा। "तुम अपने घर जाकर उससे मिल क्यों नहीं लेते?"

चाकप्रान्दन उठ खड़ा हुआ। "रात हो रही है," वो बोला। "अब तुम अन्दर जाओ।" उसने अपनी प्लेट और गिलास उठाया और अँधेरे में गुम हो गया।

मुझे मालूम था मेरे सवालों ने उसे दुखी कर दिया था। पर मैं उसके बारे में और ज़्यादा जानना चाहती थी – वो बोरी के थेगड़े वाले कपड़े ही क्यों पहनता था? वो घर क्यों नहीं जाना चाहता था? पोस्ट ऑफिस के बरामदे में अकेले बैठे-बैठे वो क्या सोचता रहता था? मैं अच्चन का इन्तज़ार करते-करते सोचती रही। आज उन्हें बहुत देर हो गई थी। साढ़े दस तक मैं जगी रही, फिर सो गई।

उस दिन के बाद से चाकप्रान्दन लगभग रोज़ ही आने लगा था। मैं उसे खाना देती और फिर हम बातें करते। दो-तीन बार जब वो आया तो अच्चन घर पर ही थे। तब मैं खाना देकर फटाफट दरवाज़ा बन्द कर देती थी। क्योंकि मुझे पता था कि मेरा उससे बात करना अच्चन को अच्छा नहीं लगता था। ऐसा नहीं कि उन्होंने मुझे डाँटा हो या उससे बात करने से मना किया हो। पर मैं जानती थी कि उन्हें मेरी चिन्ता होती थी। मुझे डर था कि कहीं ऐसा ना हों कि चाकप्रान्दन से बातें करता देख अच्चन उसे हमारे घर आने से मना कर दें।

जारी... चकमक

देखा नहीं जाता

श्रुति
स्लैम आउट लाउड संस्था,
नई दिल्ली

उन आँखों में आँसू
देखे नहीं जाते
उन्हें होते बेकाबू
देखा नहीं जाता

देखे नहीं जाते
अपने घर के हालात
सुनी नहीं जाती
पैसों की बात
फिर भी पूछते हैं
कैसे हैं हालात

और सताते हैं
दिल को हर रात मेरे
ये सवाल
क्यों देखी नहीं जाती
उनसे हमारी खुशी
और हँसी

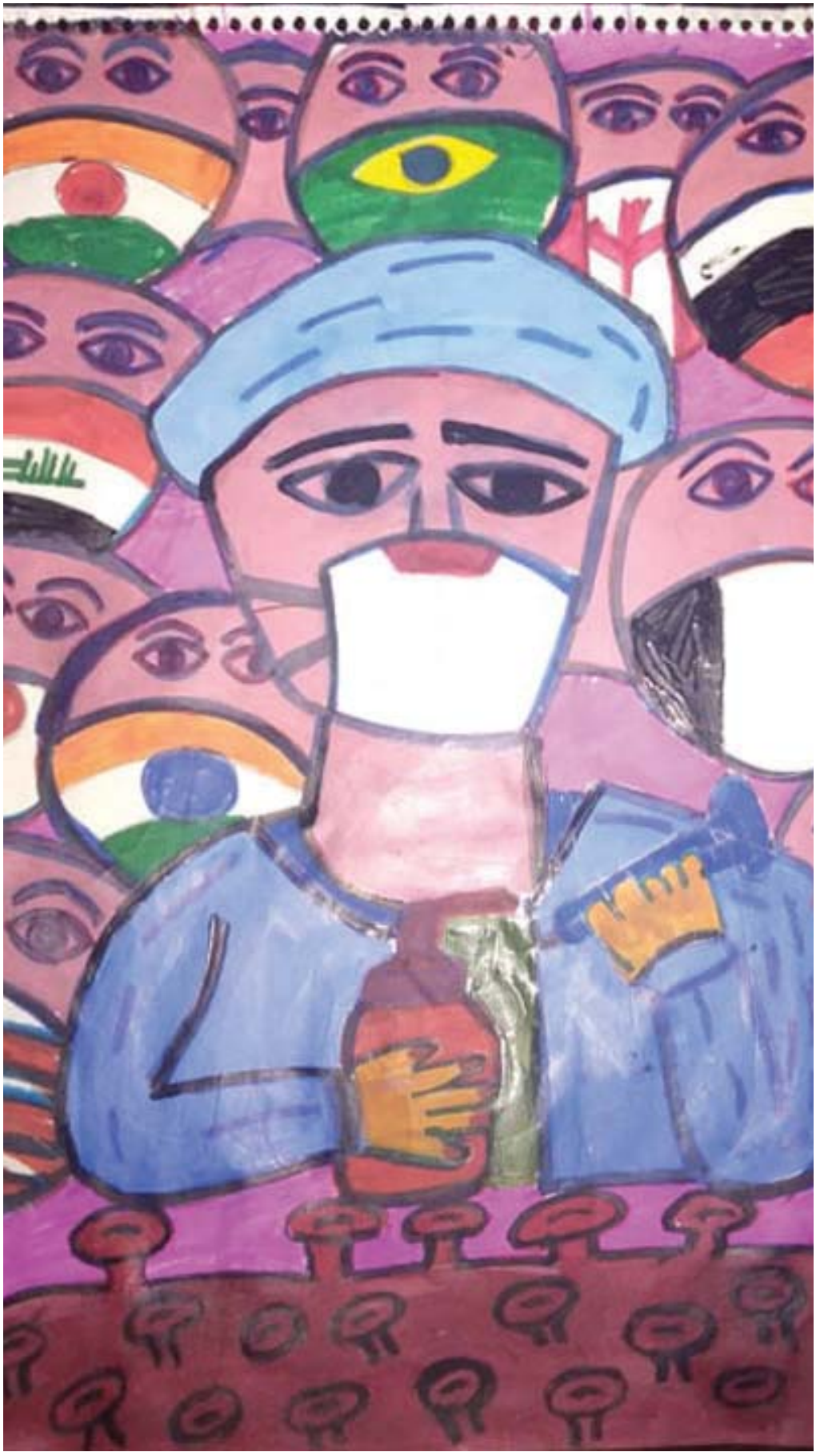

चित्र: सक्षम, सातवीं, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल वज़ीराबाद, दिल्ली

मेरा पन्ना

फुलकी का सपना

प्रज्वल इटनकर
छठवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय,
गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

"अरे वाह, इसका स्वाद तो बहुत अच्छा है!" फुलकी सपने में बड़बड़ा रही थी। तभी माँ ने उसे जगाया।

फुलकी आज बिना खाना खाए सो रही थी। माँ उसे थपकी दे रही थीं। फुलकी को करेला बिलकुल भी पसन्द न था। उस रात माँ ने करेले की सब्ज़ी बनाई थी। फुलकी मुँह फुलाकर खाना खाने से इन्कार कर रही थी। माँ खेत से थकी हारी लौटी थीं। उसे फुलकी की ये आदत बिलकुल पसन्द नहीं थी कि ये नहीं खाऊँगी, वो नहीं खाऊँगी। उसने सोचा रहने दिया जाए एक दिन भूखा तो सब अक्ल ठिकाने आ जाएगी। उसने भी फुलकी को नहीं मनाया। फुलकी रोते-रोते भूखे पेट सो गई। सपने में उसने देखा कि वो अपने दोस्तों के साथ बॉल खेल रही है। खेलते हुए बॉल कहीं खो गई। फुलकी उसे खोजते हुए बहुत दूर चली गई। बहुत देर हो गई। उसे भूख लग गई। मगर आसपास कुछ भी खाने को नहीं था। घूमते-घूमते वो एक खेत में गई। वहाँ भी कुछ न था। अचानक उसे करेले की बेल नज़र आई। बहुत सारे करेले उसमें लगे हुए थे। छोटे-मोटे, गोल-लम्बे, हरे-हरे, ताज़े-ताज़े। उसने मुँह टेढ़ा किया और कहा, "यहाँ भी करेला, मुझे नहीं खाना।"

अचानक से एक करेला उसके सामने आया और बोला, "देखो फुलकी, करेले को ऐसे इन्कार नहीं करते। ये बड़े गुणकारी होते हैं। सेहत के लिए अच्छे होते हैं। करेले की सूखी सब्ज़ी हो या फिर भरवां करेला माँ दोनों ही बहुत अच्छा बनाती हैं। देखना खाकर।"

और उसने रोटी और करेले की सूखी तली हुई सब्ज़ी खाने को दी। बहुत ज़ोर की भूख लगी थी। बेचारी फुलकी क्या करती? उसने खाना शुरू किया। और एक निवाला खाते ही ज़ोर-से चिल्लाई, "अरे वाह, ये तो सचमुच बहुत स्वादिष्ट है।"

तभी माँ ने उसे जगाया और पूछा, "क्या स्वादिष्ट है?"

जो फुलकी ने देखा वो तो सपना था। पर जागकर उसने बस इतना कहा, "मुझे भूख लगी है।" माँ ने थाली परोसी। फुलकी ने करेला खाना शुरू किया। उसमें कड़वाहट बिलकुल भी न थी। सब्ज़ी सच में बहुत स्वादिष्ट बनी थी।

मेरा पन्ना

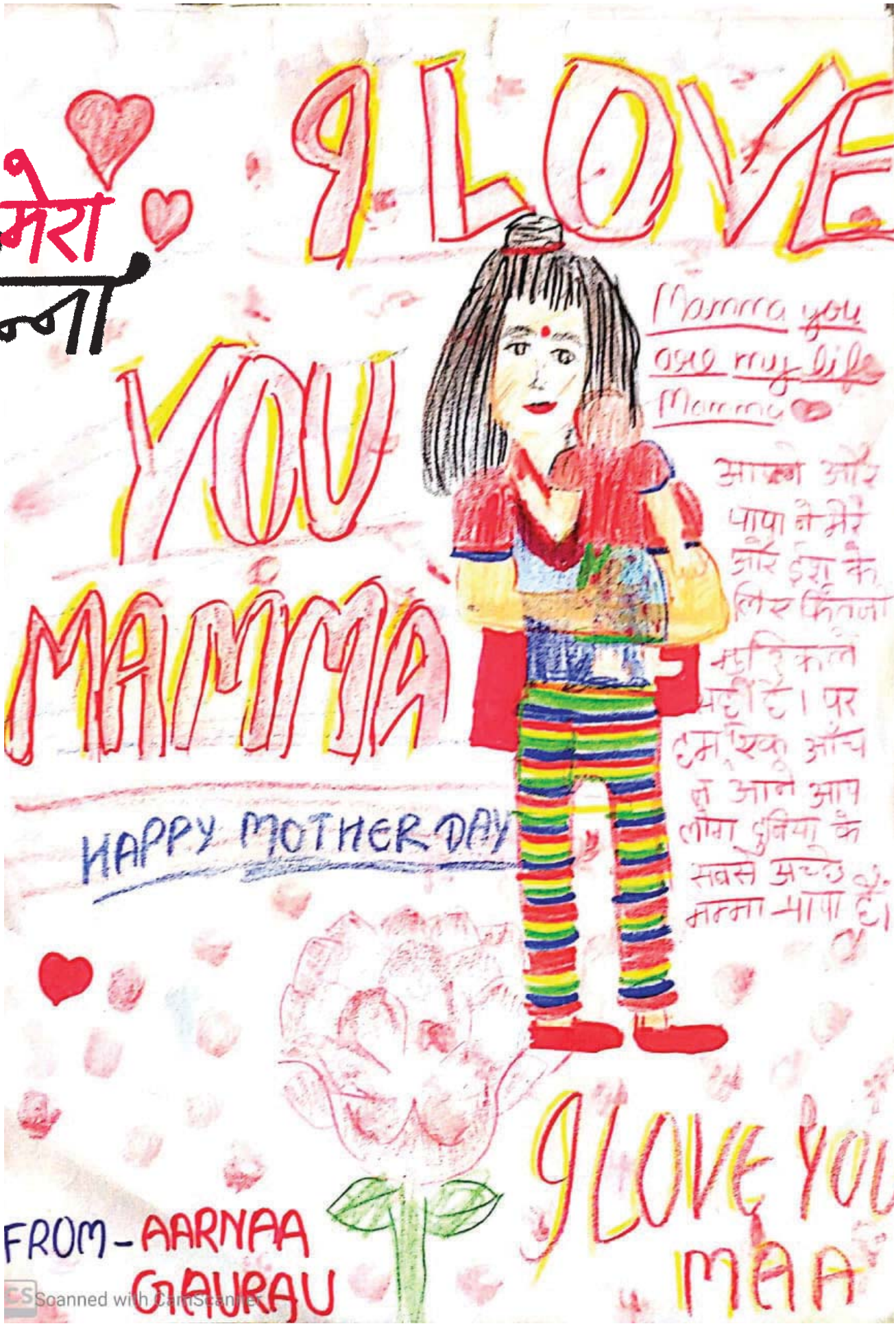

चित्र: आरना गौरव, पाँचवीं, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

जलेबी

शिवानी महावर
आठवीं, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र,
सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक गाँव था। उसमें दो बच्चे रहते थे। एक का नाम रामू और दूसरे का श्यामू था। एक दिन दोनों बाज़ार जा रहे थे। उनकी माँ ने उन्हें घर का सामान लाने भेजा था। दोनों दुकान से सामान लेकर घर की ओर निकल पड़ते हैं। रास्ते में उन्हें दस रुपए दिखाई देते हैं। दोनों दस रुपए पर टूट पड़ते हैं। रामू कहता है, "पहले मैंने इसे देखा। इसलिए इसे मैं ही लूँगा।" श्यामू कहता है, "नहीं, पहले मैंने देखा था। इसे मैं लूँगा।" दोनों झगड़ने लगते हैं। मार-पीट करने लग जाते हैं।

तभी उस रास्ते से एक बूढ़ा व्यक्ति गुज़रता है। वह बूढ़ा व्यक्ति उन्हें लड़ने से मना करता है। लेकिन वे उसकी बात नहीं मानते और झगड़ते रहते हैं। उस बूढ़े व्यक्ति को गुस्सा आ जाता है। वह व्यक्ति दोनों को एक-दो डण्डे लगा देता है। फिर दोनों चुप हो जाते हैं। बूढ़ा व्यक्ति पूछता है, "तुम क्यों लड़ रहे हो?" वे अपनी समस्या बताते हैं। वह बूढ़ा व्यक्ति उपाय सोचने लगता है और कहता है, "तुम दोनो मेरे पीछे-पीछे चलो।" वह उन्हें एक मिठाई की दुकान पर ले जाता है और दुकानदार से कहता है, "भाई दस रुपए की जलेबी दे दो।" वह जलेबी लेकर दोनों को देता है और कहता है, "इसे मिलकर खाना।" फिर वह वहाँ से चला जाता है। दोनों मिलकर जलेबी खाते हैं। फिर रामू श्यामू से कहता है, "अगर वह बूढ़ा व्यक्ति हमें लड़ने से नहीं रोकता तो आज हमारी दोस्ती खतम हो जाती।"

घर ढूँढ़ते शेर मिला

पुष्पा दसाणा
पाँचवीं, रा. प्रा. विद्यालय सागोरिया,
कुम्भलगढ़, राजसमन्द, राजस्थान

एक बार श्यामू नाम का एक लड़का था। वह अपने लिए नया घर ढूँढ़ रहा था। नया घर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वह जंगल जा पहुँचा। जंगल में घूमते-घूमते उसे एक गुफा नज़र आई। वह उस गुफा की ओर जाने लगा। गुफा के अन्दर जाकर देखा तो जंगल का राजा शेर सो रहा था। श्यामू उसे देखकर इतना डर गया कि वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। लेकिन उस घने जंगल में उसके चिल्लाने की आवाज़ भला कौन सुनता सिवाय शेर के।

उसकी आवाज़ सुनकर शेर जाग गया। उसकी नज़र श्यामू पर पड़ी। श्यामू को लगा कि शेर उसे दबोच लेगा। लेकिन शेर ऐसा नहीं था। वो बहुत अकेला था। इसलिए उसने श्यामू से दोस्ती करने को कहा। उस दिन से दोनों की दोस्ती गई। दोनों साथ-साथ जंगल में घूमते-फिरते। दोनों को किसी का डर नहीं था। वो पेड़ों से फल तोड़कर खाते और आराम से रहते थे। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती गहरी से गहरी हो गई।

माथापच्ची

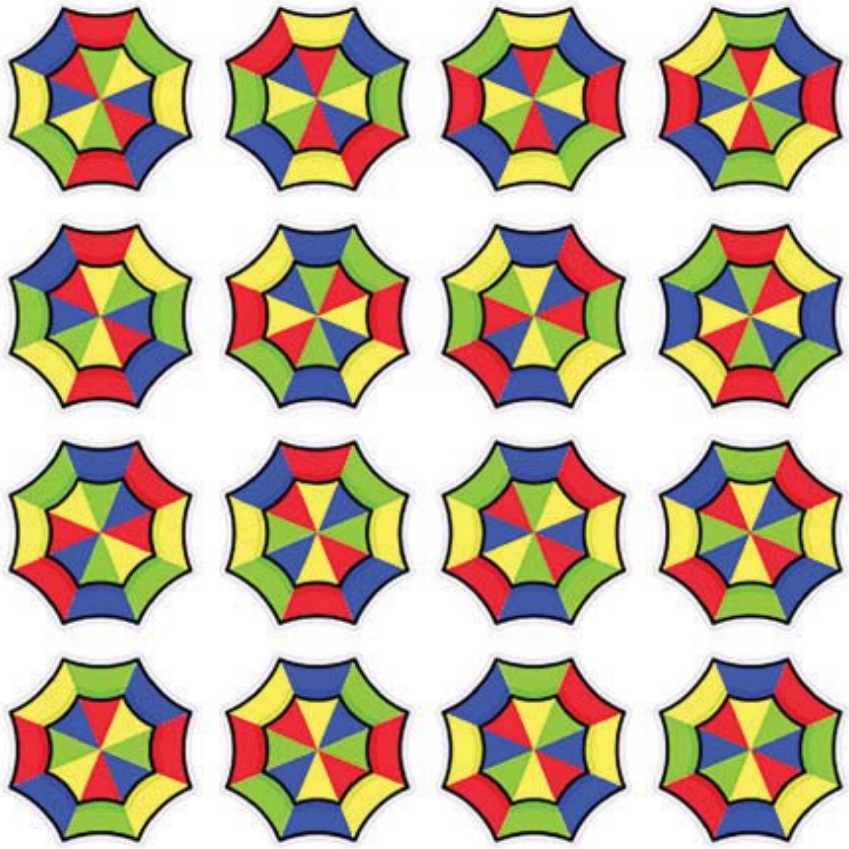

1.

कौन-से दो छाते बिलकुल एक जैसे हैं?

2.

घड़ी के डायल को किसी भी आकार के 6 भागों में इस तरह बाँटना है कि हर भाग में संख्याओं का योग समान हो। कैसे करोगे?

3.

एक दुकानदार के पास 6 टोकरियाँ हैं। 3 टोकरियों में मुर्गियों के अण्डे हैं और 3 में बत्तख के। अण्डों की संख्या है - 5, 6,12,14, 23 और 29। यदि मैं बत्तख के अण्डों की इस टोकरी को बेच दूँ तो मेरे पास बत्तख के अण्डों से दुगुने मुर्गी के अण्डे बचेंगे। दुकानदार किस टोकरी के बारे में ऐसा सोच रहा था?

4.

प्रश्न वाली जगह में कौन-सा चिन्ह आएगा?

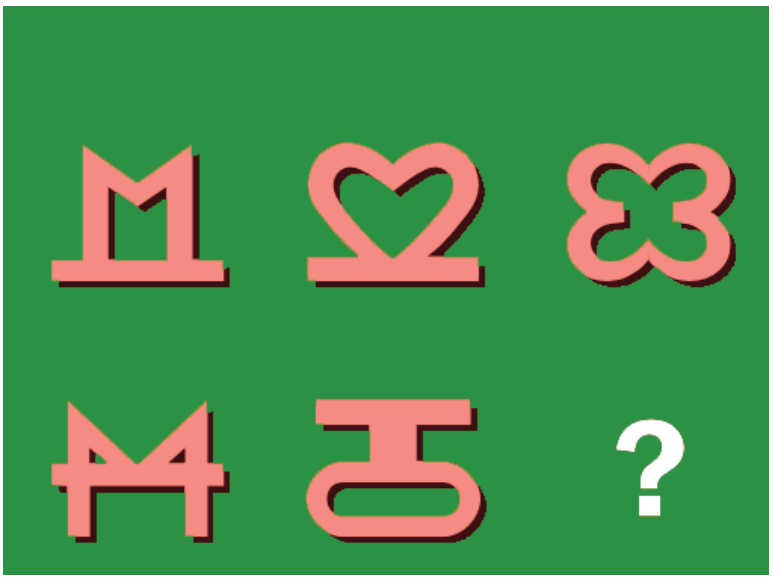

5.

अर्श, डॉली, बेनी और जिया में से कोई एक सीरियल किलर है। अर्श और डॉली एक महीने पहले ही दोस्त बने हैं। पिछली रात बेनी जिसके साथ टहलने गया था वो कातिल नहीं है। डॉली कातिल को स्कूल के टाइम से जानती है और पिछले महीने हुए एक हादसे में कातिल के दोनों पैरों बेकार हो गए। इन सब बातों के आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि कातिल कौन है?

6.

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। तुम्हें इन सभी शब्दों के आगे दो अक्षर का एक ही शब्द लगाकर नए शब्द बनाना है।

........कट

..........तब

........ताल

..........वट

.........तूत

7.

इस चित्र में कुकुरमुत्तों के साथ-साथ एक नन्हा चूहा भी छुपा हुआ है। क्या तुम उसे ढूँढ़ सकते हो?

फटाफट बताओ

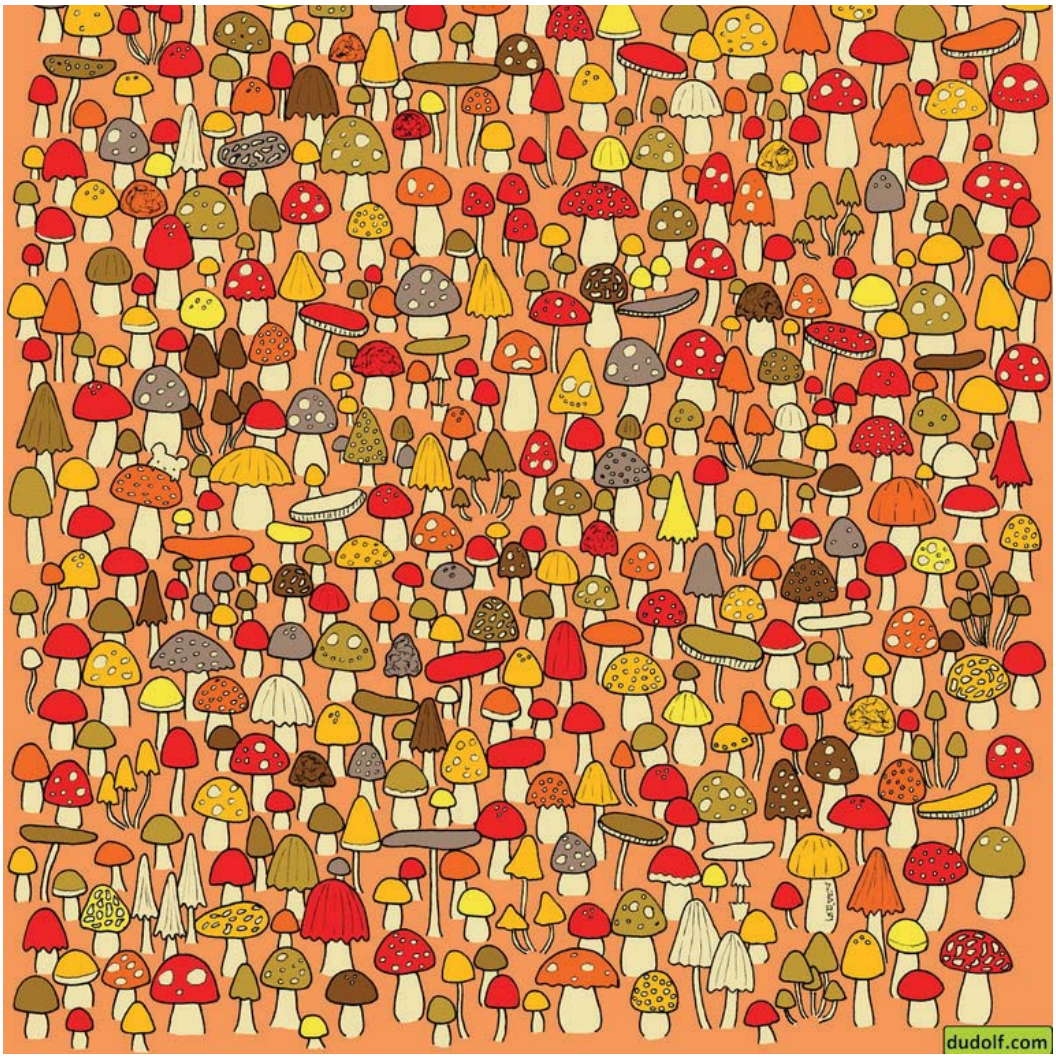

ऐसी कौन-सी चीज़ है जो जून में होती है पर दिसम्बर में नहीं, आग में होती है पर पानी में नहीं?

([illegible])

दो अंगुल की है सड़क, उस पर चले वो बेधड़क
लोगों के है काम आती, समय पड़े तो खाक बनाती

(माचिस की तीली)

बतलाओ ऐसी दो बहनें, संग हँसे संग गाएँ
उजले-काले कपड़े पहनें, पर मिल कभी ना पाएँ

(आँखें)

हरे-हरे से हैं दिखे, पक्के हो या कच्चे
भीतर जैसे लाल मलाई के ठण्डे, मीठे लच्छे

(तरबूज)

कपड़े-बाल बनाती वह,
खाती नहीं कतराती वह

(कैंची)

सात रंग की एक चटाई,
बारिश में देती दिखलाई

(इन्द्रधनुष)

ऐसा क्या है जिसे तुम दिन भर
में कई बार उठाते-रखते हो?

(कदम)

सुडोकू-32

8			1	9	7		6	5
5		3		8		9		
	1		6		5		2	
	9						4	
4	7		2			6		
2	3		9	4				
	8	7		6		5	9	
		2		7		4	3	
3	4		5		9	1	8	7

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, पीले बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर डब्बे में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

मेरा पन्ना

चित्र: किरण कुमारी, छठवीं, ग्राम बडहुलिया, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

दोस्ती

शेख सना परवीन
सातवीं, बाबई, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

एक समय था जब इकबाल बहुत छोटा था। वह हर चीज़ से बहुत प्यार करता था। उसने उस समय एक गिलहरी पाली थी। जब उस गिलहरी की माँ को एक बिल्ली ने मार दिया था तो इकबाल को बड़ा दुख हुआ। उसने गिलहरी को 'गिल्लू' नाम दिया। जब भी गिल्लू देखती कि इकबाल खेलकर घर आ गया है तो नीचे उतरकर उसके कन्धे पर बैठ जाती। कुछ दिन ही हुए थे कि गिल्लू और इकबाल में पक्की दोस्ती हो गई। वह अब एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानने लगे थे। हर सुबह इकबाल अनाज लगाता। गिल्लू नीचे उतरकर आती और नाश्ता कर चली जाती। खाने के समय वो खुद ही नीचे उतर आती और खाना खाकर चली जाती।

अब गिल्लू के बहुत सारे दोस्त बन गए थे। तोता जो हर रोज़ जाम के पेड़ पर जाम खाने आता था। कौआ उसे हर शाम और सुबह अपनी पीठ पर बैठाकर घूमने ले जाता। मैना उससे बात करने आती। उसी पेड़ पर एक गिरगिट रहता था। वो भी गिल्लू का दोस्त था।

पर सब गिलहरी के ही दोस्त थे। गिरगिट का कोई भी दोस्त नहीं था। उसने गिल्लू को मारने का सोचा और उसे पेड़ से गिरा दिया और मार डाला। यह करते हुए इकबाल ने उसे देख लिया था। उसने गिरती गिल्लू को पकड़ने का सोचा पर तब तक बहुत देर हो गई थी। वह मर गई।

इसके बाद इकबाल को कोई चीज़ का सुख नहीं रहा। उसके मर जाने के बाद उसके दोस्त व इकबाल खूब रोए और उसे दफनाने ले गए। इसके बाद इकबाल ने एक और चीज़ पाली जो अगली कहानी में है। इकबाल अब बहुत बड़ा हो चुका है।

माथापच्ची

जवाब

1.

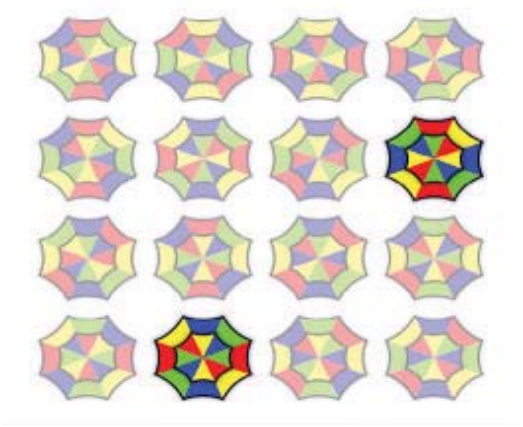

2.

4. ध्यान से देखो, यह सभी चिन्ह 1 से 5 तक की संख्याओं के दर्पण प्रतिबिम्ब (मिरर इमेज) को आपस में जोड़कर बनाए गए हैं। इसलिए अगला चिन्ह होगा:

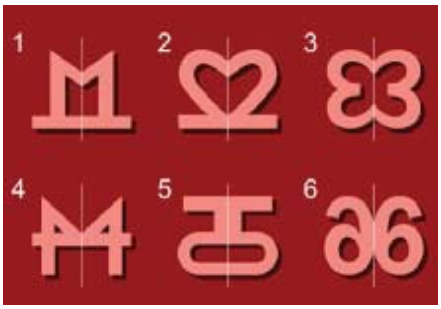

3. दुकानदार 29 अण्डों वाली टोकरियों के बारे में सोच रहा था। 23, 12 और 5 अण्डों वाली टोकरियों में मुर्गी के अण्डे थे और 14 व 6 वाली टोकरियों में बत्तखों के। अब मुर्गियों के कुल अण्डे बचते हैं: 23+12+5 = 40 और बत्तखों के: 14+6= 20

5. चूँकि डॉली कातिल को स्कूल के टाइम से जानती है इसलिए अर्श कातिल नहीं हो सकता क्योंकि वो दोनों एक महीने पहले ही दोस्त बने हैं। डॉली खुद भी कातिल नहीं हो सकती क्योंकि जाहिर-सी बात है कि वो खुद को स्कूल टाइम के पहले से जानती होगी। बेनी भी कातिल नहीं हो सकता क्योंकि वो पिछली ही रात टहलने गया था जबकि कातिल के पैर तो हादसे में बेकार हो गए थे। तो, कातिल जिया है।

6. करकट, करतब, करताल, करवट, करतूत

7.

जून की चित्रपहेली का जवाब

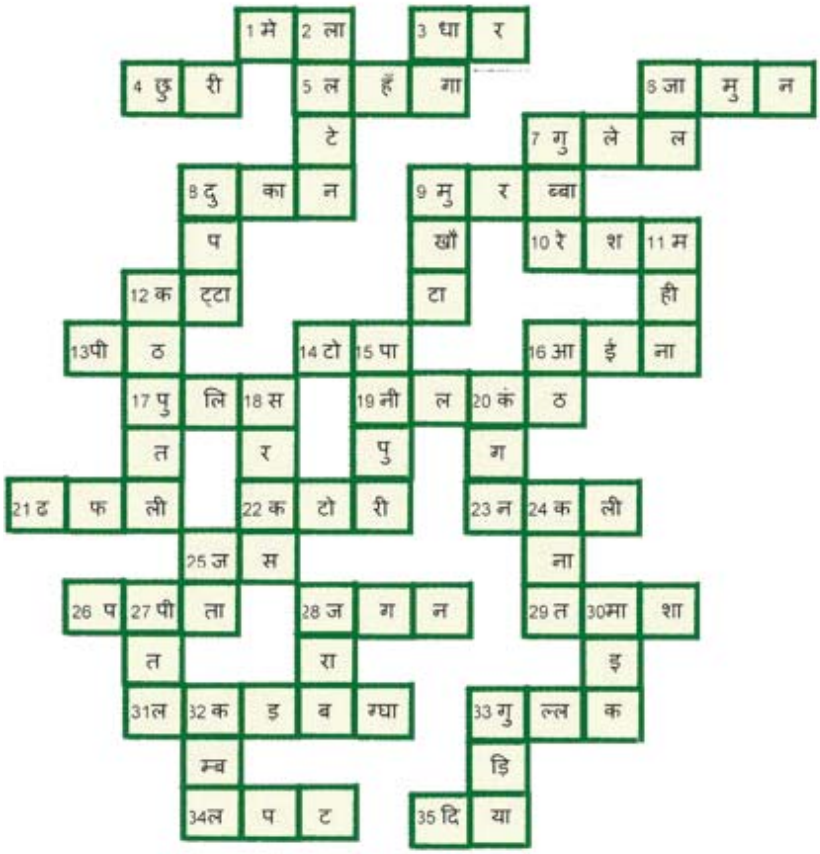

सुडोकू-31 का जवाब

8	4	5	9	6	2	3	7	1
1	3	2	4	7	8	9	6	5
7	6	9	5	3	1	2	8	4
5	9	8	2	4	6	7	1	3
6	2	3	1	9	7	4	5	8
4	1	7	8	5	3	6	9	2
3	5	6	7	1	4	8	2	9
9	8	4	6	2	5	1	3	7
2	7	1	3	8	9	5	4	6

पुस्तक चर्चा

मेघ की छाया

भूमिका

सुशील शुक्ल

कविता संग्रह
मेघ की छाया

प्रभात
चित्र: अतनु रॉय
प्रकाशक: एकलव्य

हाथी आया गाँव में
हाथी आया हाथी आया
सब चिल्लाए गाँव में...

पेज 12 पर है यह कविता। इसे एक बार मन में पढ़ लो। थोड़ी देर बाद जब इसके अर्थ मन में घुलने लग जाएँ तो इसे एक बार फिर पढ़ो। भाव के साथ बोलकर।

जैसे अपने किसी दोस्त को सुनाते हैं। वैसे। कहते हैं कविता कुछ पढ़कर समझ में आती है और कुछ सुनकर समझ में आती है। इस कविता में गाँव की एक साधारण घटना है। हाथी का आना। हालाँकि यह कविता हाथी आने की घटना के बारे में ही नहीं है। जैसे घर बनाने में ईंट-गारा लगता है। घर को देखो तो भी वही ईंट-गारा दिखता है। पर घर की मिलजुल या संघर्ष बाहर से कहाँ दिखती है? इस कविता में भी यही लगता है। हाथी के आ जाने की घटना वैसे सिर्फ ईंट-गारा नहीं है। कविता का आनन्द इस बात में समाया लगता है कि कैसे इतने सारे लोग किसी एक घटना से जुड़ गए हैं। हाथी का आना जैसे गाँव की झील में उठ गई एक तरंग है जो झील के पूरे पानी में एक हलचल पैदा करती है। कविताएँ कुछ असल ज़िन्दगी और कुछ सपनों से बनती हैं। इस कविता का गाँव सपने का गाँव भी है। एक गाँव जहाँ लोगों का जीवन एक-दूसरे से गुँथा हुआ है। इस कदर कि एक चींटी भी आ जाती तो भी एक हलचल होती। इस कविता की मिठास इसी गुथन में है।

इस संग्रह की कविताएँ बहुत सारे लोगों के जुड़ावों की कविताएँ हैं। उनको पढ़ मन में उतर आने वाला आनन्द मिल-जुल का है।

इस मिल-जुल से गाँव में जो भी हाथी आता देखता है वह दूसरे को बताता है – उपले थाप रही काकी चिल्लाकर बता रही हैं। काका दौड़े जा रहे हैं, जैसे वे सबसे ज़्यादा लोगों को सबसे पहले बताना चाहते हैं कि किसी से हाथी को आता देखना छूट न जाए। दादी बूढ़ी हैं। उनका अनुभव ज़्यादा है। वे शायद कई बार हाथी को आते देख चुकी हैं। उन्हें याद है कि हाथी इस बार बड़े दिनों में आया है। इस कविता के बड़े-बुज़ुर्ग बच्चों जैसे दौड़-पुकार कर रहे हैं। बता रहे हैं कि हाथी आया है। और बच्चे? ...वे मज़े-से एक पेड़ की छाँव में खड़े हाथी को आते देख रहे हैं। ऐसा क्यों? क्या कविता में दिख रहा हाथी हाथी न होकर कुछ और है? कोई मुश्किल है? हाथी-सी विशाल? गाँव में सब एक-दूसरे को सचेत कर रहे हैं? हाथी हो या हाथी के रूप में आती कोई मुश्किल – दोनों ही अर्थों में कविता का केन्द्रीय भाव मिल-जुल, साथ, एका बना रहता है।

इस संग्रह का नाम है – *मेघ की छाया।* इसकी कविताओं में एक मेघपन है। इन्हें अगर मन में पढ़ोगे तो मन में अर्थ की एक बिजली कौंध जाएगी। बोलकर पढ़ोगे तो बिजली का पीछा करती आ रही मेघों की गड़गड़ाहट-झनझनाहट सुनोगे।

मेघ की छाया

मेघ ना सही
छुएँ मेघ की छाया
सोच रही खेतों की
धूल सी काया

हवा आई
घटा लाई
झम बरसाया

खेतों ने छू ली
मेघों की
जल भरी काया

हाथी आया गाँव में

हाथी आया गाँव में
हाथी आया हाथी आया
सब चिल्लाए गाँव में

उपले पाथ रही थी काकी
बोली देखो देखो हाथी

काका दौड़ा-दौड़ा आया
अरे महावत हाथी लाया

लगी बताने बूढ़ी दादी
बड़े दिनों में आया हाथी

हाथी आया गाँव में
बच्चे देख रहे हाथी को
दूर खड़े हो छाँव में

प्रभात

प्रभात बाल साहित्य के क्षेत्र में एक जाना माना नाम हैं। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता और नाटक की 25 किताबें प्रकाशित। लोक भाषाओं में लगभग 40 किताबों का सम्पादन व पुनर्लेखन।

युवा कविता समय सम्मान, 2012; सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार, 2010; बिग लिटिल बुक अवार्ड, 2019 और किताब सियार और मोर FCCI पब्लिशिंग अवार्ड, 2020 के तहत स्पेशल जूरी अवार्ड से सम्मानित।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

25% OFF

मॉनसून स्पेशल ऑफर

प्रभात की 12 किताबों का सेट

माड़ की लोककथाएँ, कविता संग्रह और पिक्चर बुक्स!

कीमत सिर्फ ~~625~~ ₹ 450/-

(डाक खर्च सहित)

25% OFF

25% OFF

ऑफर केवल 31 जुलाई तक।

ऑर्डर करने के लिए pitara@eklavya.in पर मेल कर सकते हैं या हमें फोन कर सकते हैं। +91 755 297 7770-71-72-73

https://www.pitarakart.in/Monsoon_Special_Offer

Big Little Book Award Winning Author

प्रभात के लेखन में मौलिकता और सहजता के साथ सादगीपूर्ण जीवन के चित्रों और अनुभवों की झलक मिलती है। उनकी रचनाएँ बच्चों को खुशी और कौतुहल के दायरे में डूबने के मौके देती हैं। बाल साहित्य की दुनिया में प्रभात एक नई लहर ले आए हैं।

- बिग लिटिल बुक अवार्ड, 2019

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म प्र से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन